

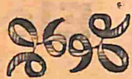
NE { OFF. : 3237
RES. : 3237 EXT.

MIR

ouse

ulture Goods,
erials
Suppliers ★

BRIDGE, SRINAGAR,
KASHMIR.



★ 

265
(9)

s

Blasting Fuses







WISH YO

KIN

M

Distributors for :-

ARYAN Brush Co.	BLACK MAGIC & Broot products	F P

अनेकवार हमनैं तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ तथा आगेकथनकरणाहै ॥ तथा अबीइसअध्यायविषे कथनकऱ्याजावैंगा ॥ सोज्ञान मैंपरमेश्वर तुमारेतांई कथनकरताहूं ॥ तूं सावधानहोइकैश्रवणकर ॥ ईहां (इदंतु) यावचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै सोतुशब्द पूर्वअध्यायविषेकथनकऱ्येहुए सगुणब्रह्मकेध्याननैं इसज्ञानविषे विलक्षणताकूंकथनकरेहै ॥ अर्थात् यहआत्मज्ञानहीं साक्षात् मोक्षकेप्राप्तिकासाधनहै ॥ पूर्वकथनकऱ्याहुआध्यान साक्षात् मोक्षकेप्राप्तिकासाधनहैनहीं ॥ काहेतैं जैसे आत्मज्ञान अज्ञानकीनिवृत्तिकरेहै ॥ तैसे सोध्यान अज्ञानकीनिवृत्तिकरतानहीं ॥ यातैं सोध्यान साक्षात् मोक्षकेप्राप्तिकासाधननहींहै ॥ किंतु सोध्यान तौं अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा इसआत्मज्ञानकूंसंपादनकरिकैहीं क्रमकरिकै तामोक्षकूंउत्पन्नकरैहै ॥ यहवार्त्ता पूर्वअध्यायविषेकहिआयेहैं ॥ पुनः कैसाहैसोज्ञान गुह्यतमहै ॥ अर्थात् अतिरहस्यहोणेतैं सोज्ञान गोप्यराखणेयोग्यहै ॥ अब ताज्ञानकीगोप्यताविषे तिसज्ञानका हेतुगर्भितविशेषण कहेहैं (विज्ञानसहितमिति) हेअर्जुन कैसाहैसोज्ञान विज्ञानसहितहै ॥ अर्थात् मैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारकेअपरोक्षअनुभवपर्यंतहै ॥ याकारणतैंहीं सोज्ञान गोप्यराखणेयोग्यहै ॥ ऐसाअतिरहस्यरूपभीयहज्ञान मैंभगवान्वासुदेव तुमारेतांई कथनकरताहूं ॥ अब ताअर्जुनविषे तिसज्ञानकेउपदेशकरणेकीयोग्यताबोधनकरणेवासतै श्रीभगवान् ताअर्जुनका विशेषण कथनकरेहै (अनसूयवेइति) हेअर्जुन तूं असूयातैंरहितहैं ॥ यातैं इसज्ञानकेउपदेशका तूं अधिकारीहैं ॥ तहां गुणोंविषेदोषदृष्टिकरणी याकानाम असूयाहै ॥ ताअसूयातैं तूंरहितहैं ॥ अर्थात् यहकृष्णभगवान् हमारेसमीप सर्वदा आपणीऐश्वर्यताकथनकरिकै आपणीहींस्तुतिकरताहै याप्रकारकी असूयातैं तूं रहितहैं ॥ ईहां असूयातैंरहितपणा दूसरेभी आर्जवसंयमादिकशिष्यकेगुणोंका उपलक्षकहै ॥ अर्थात् शिष्यकेसर्वगुणोंकरिकैसंपन्न तैं अर्जुनकेतांई मैं यहज्ञान उपदेशकरताहूं ॥ शंका ॥ हेभगवन् ऐसेज्ञानकीप्राप्तिकरिकै हमारेकूं कौनफलहोवैंगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (यज्ज्ञात्वामोक्ष्यसेऽशुभात्) हेअर्जुन जिसआत्मज्ञानकूंप्राप्तहोइकै तूं शीघ्रही इससर्वदुःखोंकेकारणरूपसंसारबंधनतैं मुक्तहोवैंगा इति ॥ १ ॥ ❀ ॥ अब तिसआत्मज्ञानविषे अधिकारीजनोंकीअभिमुखता करावणेवासतैं श्रीभगवान्पुनः तिसज्ञानकीस्तुतिकरेहै ॥

(मू० श्लो०) राजविद्याराजगुह्यंपवित्रमिदमुत्तमम् ॥ प्रत्यक्षावगमंधर्म्यंसुसुखंकर्त्तुमव्ययम् ॥२॥ राजविद्या । राजगुह्यं । पवित्रम् । इदम् । उत्तमम् । प्रत्यक्षावगमं । धर्म्यं । सुसुखं । कर्त्तुम् । अव्ययम् ॥२॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन यहआत्मज्ञान सर्वविद्यावोंकाराजाहै तथासर्वगुह्यपदार्थोंकाराजाहै तथासर्वतेंउत्तम पवित्रहै तथाप्रत्यक्षहैप्रमाणजिसविषे तथासर्वधर्मकाफलरूपहै तथासुखपूर्वकहीं करणेकूंशक्यहै तथाअक्षयफलवालाहै ॥ २ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहआत्मज्ञानकैसाहै जितनीकी लौकिक तथाशास्त्रीय विद्याहैं ॥ तिनसर्वविद्यावोंकाराजाहै ॥ अर्थात् तिनसर्वविद्यावोंतैं अत्यंतश्रेष्ठहै ॥ काहेतैं यहआत्मज्ञान कार्यसहित संपूर्णमूलाअविद्याका नाशकरणेहाराहै ॥ और इसआत्मज्ञानतैंभिन्न दूसरीजितनीकीविद्याहैं ॥ तेविद्यातौं संपूर्णमूलाअविद्या कूंनाशकरतीनहीं ॥ किंतुतेविद्या तिसमूलाअविद्याकेकिसीएकदेशकाहीं विरोधीहोवैहैं ॥ जिसएकदेशकूं शास्त्रविषे मूलाअविद्या तथाअवस्थाअज्ञान इसनामकरि कैकथनकऱ्याहै ॥ पुनःकैसाहैयहआत्मज्ञान ॥ लोकशास्त्रविषे जितनैंकी गुह्यपदार्थहैं ॥ तिनसर्वगुह्यपदार्थोंकाराजाहै ॥ अर्थात् तिनसर्वगुह्यपदार्थोंतैंभी अत्यंत गुह्यहै ॥ काहेतैं यहआत्मज्ञान अनेकजन्मोंविषेकऱ्येहुए निष्कामपुण्यकर्मोंकारिकैहींप्राप्तहोवैहै ॥ तापुण्यकर्मतैंरहितजेपुरुषहैं ॥ तेपुरुष यद्यपि आपणीबुद्धिके बलतैं अनेकगुह्यपदार्थोंकूंजानैहैं ॥ तथापि इसआत्मज्ञानकूं तेपुरुष जानिसकतेनहीं ॥ यातैं यहआत्मज्ञान तिनसर्वगुह्यपदार्थोंतैं अत्यंतगुह्यहै ॥ पुनःकैसाहैयहआ त्मज्ञान सर्वतैंउत्तम पवित्रहै ॥ काहेतैं धर्मशास्त्रविषे पापकीनिवृत्ति करणेवास्तै जितनैंकीप्रायश्चित्तकथनकरेहैं ॥तेप्रायश्चित्त इसपुरुषके सर्वपापोंकीनिवृत्तिकरतेनहीं किंतु तेप्रायश्चित्त किसीएकपापकीहीं निवृत्तिकरैहै ॥ ताप्रायश्चित्तकरिकै निवृत्तहुआभी सोएकपाप आपणेकारणविषे सूक्ष्मरूपहोइकैरहैहै ॥ जिसपापवासनातैं यहपुरुषपुनः तिसपापकरणेविषेप्रवृत्तहोवैहै ॥ यातैं तेप्रायश्चित्त सर्वतैंउत्तमपवित्रनहींहै ॥ और यहआत्मज्ञानतौं अनेकसहस्रजन्मोंविषेसंचयकरयेहुए तथास्थूल सूक्ष्मअवस्थावाले जितनैंकी पापहैं तिनसर्वपापोंका तथातिनपापोंकेकारणरूपअज्ञानका शीघ्रहीं नाशकरैहै ॥ यातैं यहआत्मज्ञान सर्वतैंउत्तमपवित्रहै अर्थात् शुद्धिकरणेहाराहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् जैसे अतिइंद्रियधर्मविषे लोकोंकूंसंदेहरहैहै ॥ तैसे इसज्ञानविषेभीं लोकोंकूं संदेहहींरहैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ यहआत्मज्ञान आपणेस्वरूपतैं तथाफलतैं प्रत्यक्षहींहै इसप्रकारकेउत्तरकूं श्रीभगवान् कथनकरैहै (प्रत्यक्षावगममिति) तहां (अवगम्यतेअनेनेत्यवगमोमानम्) ॥ अर्थयह ॥ जिसकरिकैवस्तुजानीजावैहै ताकानाम अवगमहै ॥ इसप्रकारकीव्युत्पत्तिकरिकै अवगम यहशब्द प्रमाणकावाचकहै ॥ और (अवगम्यते प्राप्यतेइत्यवगमःफलम्) ॥ अर्थयह ॥ अधिकारीपुरुषोंकूं जोप्राप्तहोवै ताकानाम अवगमहै ॥ याप्रकारकी व्युत्पत्तिकरिकै सोअवगमशब्द फलवाचकहै ॥ तहां प्रथमअर्थविषेतौं प्रत्यक्षहैअवगम क्या प्रमाण जिसविषे ताकानाम प्रत्यक्षावगमहै ॥ याप्रकारके बहुव्रीहिसमासकरिकै तावृत्तिरूपज्ञानविषे स्वरूपतैं साक्षीप्रत्यक्षगम्यत्व सिद्धहोवैहै ॥ और दूसरेअर्थविषेतौं प्रत्यक्षहैअवगमक्या फल जिसका ताकानाम प्रत्यक्षावगमहै ॥ याप्रकारकेबहुव्रीहिसमासकरिकै तावृत्तिज्ञानविषे फलतैंभी साक्षीप्रत्यक्षगम्यत्व सिद्धहोवैहै ॥ तहां मैनैं यह वस्तु जान्याहै इसकारणतैं अबी हमारा इसवस्तुविषयकअज्ञान नष्टहुआहै ॥ याप्रकारकासाक्षीरूपअनुभव सर्वलोकोंकूंहोवैहै ॥ सोयहसाक्षीरूपअनुभव तावृत्तिज्ञानकूंस्वरूपतैं तथाअज्ञानकीनिवृत्तिरूपफलतैं विषयकरैहै इति ॥ इसप्र

कार विद्वान्लोकोंके साक्षीरूपअनुभवकरिकेसिद्धहुआभी सोआत्मज्ञान स्वधर्मकेप्रतिकूलनहींहै ॥ किंतु धर्म्यरूपहै ॥ अर्थात् अनेकजन्मोविषेसंचयकर्‍येहुए निष्कामधर्मका फलरूपहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ऐसाआत्मज्ञानअत्यंतदुःखकरिकेसंपादनहोताहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्कहेहै (सुसुखं कर्तुमिति) हेअर्जुन ब्रह्मवेत्तागुरुनैं कृपाकरिकै प्राप्तकर्‍याजोविचारहै सोविचारहैसहकारीजिसका ऐसाजो तत्त्वमसिआदिक महावाक्यहै ॥ तामहावाक्यकरिकै सोतत्त्वज्ञान सुखेनहीं संपादनकरणेकूंशक्यहै ॥ सोआत्मज्ञान आपणीउत्पत्तिविषे देशकालादिकोंकेव्यवधानकी अपेक्षाकरतानहीं ॥ काहेतें सोज्ञान केवल वस्तुप्रमाणकेहीं अधीनहोवैहै ॥ ध्यानकीन्यांई सोज्ञान पुरुषकीइच्छाकेअधीनहोतानहीं वस्तुकेसाथि प्रमाणकेसंबंधहुएतैंअनंतर तावस्तुकाज्ञान अवश्यकरिकै उत्पन्नहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकार विनाही आयासतैं जोआत्मज्ञानकीसिद्धि अंगीकारकरोगे ॥ तौं अल्पआयासकरिकैसाध्यक्रियाका अल्पहीं फलहोवैहै महान्फलहोवैनहीं यातैं तिसआत्मज्ञानकाभी अल्पहींफलहोवैगा महान्फलहोवैगानहीं ॥ जिसकारणतैं महान्आयासकरिकैसाध्यजेकर्महैं तिन कर्मोंकाहीं महान्फल देखणेविषेआवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (अव्ययमिति) हेअर्जुन यहआत्मज्ञान यद्यपि अनायासकरिकैहीं सिद्ध होवैहै ॥ तथापि इसआत्मज्ञानके मोक्षरूपफलकानाश होवैनहीं ॥ यातैं यहआत्मज्ञान अव्ययहै ॥ अर्थात् यह आत्मज्ञान मोक्षरूप अक्षयफलवालाहै ॥ यद्यपि अंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानविषे अव्ययरूपता संभवतीनहीं तथापि जैसे श्रुतिविषे सत्यब्रह्मकीप्रापकताकरिकै ज्ञानकूं सत्यकह्याहै तैसे ईहां श्रीभगवान्नैंभी मोक्षरूपअव्ययफलकीप्रापकताकरिकै ताज्ञानकूं अव्ययकह्याहैं ॥ और अग्निहोत्रादिककर्म यद्यपिमहान्आयासकरिकैसाध्यहैं ॥ तथापि तिनकर्मोंका नाशवान्फलहींहोवैहै यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (योवाएतदक्षरंगार्ग्यविदित्वास्मिँल्लोकेजुहोतियजतेतपस्तप्यतेबहूनिवर्षसहस्राण्यंतवदेवास्यतद्भवति ॥) अर्थयह ॥ हेगार्गी जोपुरुष इसअक्षरपरमात्मादेवकूंनजानिकै इसलोकविषे होमकरैहै तथायज्ञकरेहै तथाबहुतसहस्रवर्षपर्यंत तपकूंकरेहै ॥ तेसर्वकर्म इसपुरुषकूं नाशवान्फलकीहींप्राप्तिकरैहैं इसप्रकारतैं यहआत्मज्ञान सर्वतैंउत्कृष्टहै ॥ यातैं इसआत्मज्ञानविषे मुमुक्षुजनोंनैं अत्यंतश्रद्धाकरणीयोग्यहै इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसप्रकार यहआत्मज्ञान जोकदाचित् अत्यंतसुगम होवै तथासर्वतैंउत्कृष्टहोवै ॥ तथामहान्फलकीहेतुहोवै॥ तौं सर्वप्राणी तिसआत्मज्ञानविषे किसवास्तेनहीं प्रवृत्तहोते ॥ किंतु सर्वप्राणी ताआत्मज्ञानविषेप्रवृत्तहोणेचाहीये ॥ महान्फलवाले सुगमकार्यविषेतौं सर्व लोक स्वभावतैंहीं प्रवृत्तहोवैहैं ॥ यातैं ताआत्मज्ञानविषे सर्वप्राणीयोंकीप्रवृत्तिहुए कोईभीप्राणीसंसारीनहींहोवैगा ॥ यातैं संसारमार्गकाहीं उच्छेदहोवैगा ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं ॥

(मू० श्लो०) अश्रद्दधानाःपुरुषाधर्मस्यास्यपरंतप ॥ अप्राप्यमांनिवर्त्ततेमृत्युसंसारवर्त्मनि ॥ ३ ॥ अश्रद्दधानाः । पुरुषाः । धर्मस्य । अस्य । परंतप । अप्राप्य । मां निवर्त्तते । मृत्युसंसारवर्त्मनि ॥ ३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन इस आत्मज्ञानरूप धर्मकी श्रद्धातैंरहित पुरुष मैंपरमेश्वरकूं नंप्राप्तहोइकै मृत्युयुक्तसंसाररूपमार्गविषे निरंतरभ्रमणकरेहैं ॥ ३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहआत्मज्ञान यद्यपि संपादनकरणेकूं अत्यंतसुगमहै तथासर्वतैंउत्कृष्टहै तथामहान्‌फलकाहेतुहै ॥ तथापि इसआत्मज्ञानविषे जोसर्वप्राणीयोंकीप्रवृत्तिनहींहोती ॥ ताकेविषे इनप्राणियोंकीअश्रद्धाहीं कारणहै ॥ हेअर्जुन इसआत्मज्ञानरूपधर्मका जो स्वरूपहै तथासाधनहै तथाफलहै ॥ तेतीनों यद्यपि शास्त्रकरिकैप्रतिपादितहैं ॥ तथापि तिनोंविषे श्रद्धाकूंनहींकरणेहारे जेपुरुषहैं ॥ अर्थात् वेदतैंविरोधी कुत्सितहेतुवोंकेदर्शनकरिकै दूषितअंतःकरणवालेहोणेतैं जेपुरुष ताआत्मज्ञानके स्वरूपसाधनफलकूं अप्रमाणरूपहीं मानेहैं ॥ तथा जेपुरुष सर्वदा पापकर्मोंकूंहीं करणेहारेहैं ॥ तथा जेपुरुष दंभदर्पादिकआसुरसंपदकूंहीं धारणकरणेहारेहैं ॥ ऐसेश्रद्धाहीन पापात्मापुरुष आपणीबुद्धितैंकल्पनाकऱ्येहुए उपायकरिकै यथाकथंचित् प्रयत्नकरतेहुएभी शास्त्रविहितप्रयत्नकेअभावतैं मैं परमेश्वरकूं प्राप्तहोतेनहीं ॥ तथा मैंपरमेश्वरकीप्राप्तिकेसाधनोंकूंभी प्राप्तहोतेनहीं ॥ याकारणतैंहीं तेश्रद्धाहीनपुरुषइसमृत्युयुक्तसंसाररूपमार्गविषे भ्रमणकरेहैं ॥ अर्थात् तेपुरुष वारंवार कीटपतंगादिक नारकीययोनियोंविषेहीं भ्रमणकरेहैं ॥ ३ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व श्रीभगवान्‌नैं अर्जुनकेप्रति कहणेवास्तै प्रतिज्ञा कऱ्याजो आत्मज्ञानहै ॥ ताआत्मज्ञानकी विधिमुखकरिकै तथानिषेधमुखकरिकै स्तुतिकथनकरी ॥ तहां प्रथमदोश्लोकोंकरिकैतौं ताआत्मज्ञानकी विधिमुख करिकैस्तुतिकरी ॥ और (अश्रद्दधानाःपुरुषाः) इसतृतीयश्लोककरिकै ताआत्मज्ञानकी निषेधमुखकरिकैस्तुतिकरी ॥ तहां जिसवस्तुकीप्राप्तितैं जो महान् अर्थफलका कथनहै ॥ सोकथन तिसवस्तुकी विधिमुखस्तुतिहोवैहै ॥ और जिसवस्तुकीअप्राप्तितैं जोमहान् अर्थकेप्राप्तिका कथनहै ॥ सोकथन तिसवस्तुकी निषेधमुखस्तुतिहोवैहै ॥ इसप्रकार तीनश्लोकोंतैं तिसआत्मज्ञानकीस्तुतिकारिकै तिसआत्मज्ञानके अभिमुखकऱ्याजोअर्जुनहै ॥ तिसअर्जुनकेप्रति श्रीभगवान् अब दोश्लोकोंकरिकै सोआत्मज्ञान कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) मयाततमिदंसर्वंजगदव्यक्तमूर्तिना ॥ मत्स्थानिसर्वभूतानिनचाहंतेष्ववस्थितः ॥ ४ ॥ मया । ततम् । इदं । सर्वं । जगत् । अव्यक्तमूर्त्तिना । मत्स्थानि । सर्वभूतानि । न । च । अहं । तेषु । अवस्थितः ॥ ४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन अव्यक्तमूर्त्तिवाले मैंपरमेश्वरनैं यह सर्व जगत् व्याप्तकऱ्याहै इसकारणतैं यहसर्वभूत मेरेविषेस्थितहैं और मैंपरमेश्वरतौं तिनभूतोंविषे नहीं स्थितहूं ॥ ४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन भूतभौतिकरूप तथातिनभूतभौतिकोंकाभीकारणरूप जितनाकीयह दृश्यजगत्है ॥ जोजगत् मैंपरमेश्वरकेअज्ञानकरिकैकल्पितहै ॥ सोयहसर्वजगत् मैंअधिष्ठानरूप तथापरमार्थसत्स्वरूप परमेश्वरतैं सत्रूपकरिकै तथास्फुरणरूपकरिकै व्याप्तकऱ्याहै ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पित जे सर्प दंड जलधारा माला आदिक हैं ॥ तेसर्पादिक ताररज्जुरूपअधिष्ठाननैं आपणे इदम्अंशकरिकै व्याप्तकीयेहैं ॥ तैसे मैंअधिष्ठानरूप परमेश्वरनैं आपणेसत्ता स्फुरणकरिकै यहसर्वजगत् व्याप्तकऱ्याहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् हमारेरथविषेस्थित जो वसुदेवकेपुत्र आपहो ॥ सोआप परिच्छिन्नहो ॥ ऐसेपरिच्छिन्न आपनैं यहसर्वजगत् कैसेव्याप्तकऱ्याहै ॥ किंतु नहींव्याप्तकऱ्याहैं ॥ जिसकारणतैं इसआपकेकहणेविषे प्रत्यक्षप्रमाणकाविरोधहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (अव्यक्तमूर्त्तिनाइति) तहांनेत्रादिककरणोंका नहींविषयहै स्वप्रकाशअद्वितीयसत्चित् आनंदरूपमूर्त्तिजिसकी ताकानाम अव्यक्त मूर्त्ति हैं ॥ ऐसेअव्यक्तमूर्त्तिरूप मैंपरमेश्वरनैं नहीं यहसर्वजगत् व्याप्तकऱ्याहै ॥ और जिसहमारेइसस्थूलशरीरकूंतूं मांसमयनेत्रोंकरिकै देखताहैं ॥ इसशरीरकरिकै हमनैं कोईसर्वजगत् व्याप्तकऱ्यानहीं ॥ यातै हमारेकहणेविषे प्रत्यक्षप्रमाणका विरोधहोवैनहीं ॥ जिसकारणतै मैंपरमेश्वरनैं यहसर्वजगत् व्याप्तकऱ्याहै ॥ तिस कारणतैंहीं यहस्थावरजंगमरूपसर्वभूत मैंपरमेश्वरकेसत्तास्फुरणरूपकरिकै सत्कीन्यांई तथास्फुरणकीन्यांई स्थितहैं ॥ तथापि मैं परमेश्वर तिनकल्पितभूतोंविषे वास्तवतैं स्थितनहींहूं ॥ काहेतैं अकल्पितरूपजोमैंपरमेश्वरहूं तथाकल्पितरूपजो यहभूतहैं तिनदोनोंका कोईसंबंधहीं संभवतानहीं ॥ संबंधतैंविना तिनभूतोंविषे वास्तवतैं हमारीस्थिति संभवतीनहीं ॥ याकारणतैंहीं वेदवेत्तापुरुषोंनैं यहवचनकह्याहै ॥ (यत्रयदध्यस्तंतत्कृतेनगुणेनदोषेणवाऽणुमात्रेणापिनससंबध्यते ॥) अर्थयह ॥ जिसअधिष्ठानविषे जोवस्तु कल्पितहोवैहै ॥ तिसकल्पितवस्तुकृत गुणकेसाथि अथवा दोषकेसाथिसोअधिष्ठान किंचित्मात्रभी संबंधकूंप्राप्तहोवैनहीं इति ॥ ४ ॥ ❋ ॥ शंका ॥ हेभगवन् सर्वविकारोंतैंरहित तथासर्वत्रपरिपूर्ण ऐसेजोआप परब्रह्महो ॥ तिसआपकी तिनभूतोंविषे वास्तवतैं स्थिति मतहोवौ ॥ परंतु तेसर्वभूततौं आपपरमेश्वरविषे वास्तवतैंहीं स्थितहोवैंगे ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥

(मू० श्लो०) नचमत्स्थानिभूतानिपश्यमेयोगमैश्वरम् ॥ भूतभृन्नचभूतस्थोममात्माभूतभावनः ॥ ५ ॥ न । च । मत्स्थानि । भूतानि । पश्य । मे । योगम् । ऐश्वरम् । भूतभृत् । न । च । भूतस्थः । मम । आत्मा । भूतभावनः ॥५॥ (इतिप०) ॥ हेअर्जुन यहसर्वभूतमैंपरमेश्वरविषेस्थित नहींहै मैंपरमेश्वरके इसअद्भुत प्रभावकूं तूंदेखँ जोमैंपरमेश्वरका सच्चिदानंदस्वरूप भूतोंकूंधारणकरता हुआ तथाभूतोंकूंउत्पन्नकरताहुआ भी तिनभूतोंविषेस्थित नहींहैं ॥ ५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसे आकाशविषेस्थितसूर्यविषे जलकेचलनादिकविकार कल्पितहोवैहैं ॥ तैसे मैंपरमेश्वरविषे कल्पित जेयहसर्वभूतहैं ॥ तेसर्वभूत वास्तवतैं मैंपरमेश्वरविषेहैं नहीं ॥ हेअर्जुन तू इसप्राकृतमनुष्यबुद्धिकूंपरित्यागकरिकै सूक्ष्मविचारदृष्टिकरिकै मैंपरमेश्वरके इसयोगऐश्वरकूंदेख ॥ अर्थात् जैसे लोकप्रसिद्ध मायावीपुरुषका अघटितअर्थकेबनावनेकीचातुर्यतारूपप्रभावहै ॥ तैसे महामायावीरूप मैंपरमेश्वरके इस अघटितअर्थके बनावनेकी चातुर्यतारूपप्रभावकूं तूं देख ॥ जो मैंपरमेश्वर वास्तवतैं किसीवस्तुका आधेयरूपभीनहींहूं ॥ तथा किसीवस्तुका आधाररूपभी नहीं हूं ॥ तौभीमैंपरमेश्वर इनसर्वभूतोंविषेस्थितहूं ॥ तथा मैंपरमेश्वरविषे यहसर्वभूतस्थितहै ॥ यह मैंपरमेश्वरकी एकमहान्मायाहै ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरका जोसच्चिदानंदघनएकरस परमार्थस्वरूपहै ॥ सोहमारास्वरूपहीं भूतभृत्है ॥ अर्थात् सोहमारास्वरूपहींउपादानकारणतारूपकरिकै तिनसर्वकार्यरूपभूतोंकूं धारणकरेहै ॥ तथापोषणकरेहै यातें सोहमारास्वरूप भूतभृत् कह्याजावैहै ॥ और सोहमारास्वरूपहीं कर्त्तारूपकारिकै तिनसर्व भूतोंकूं उत्पन्नकरेहै ॥ यातैं सोहमारास्वरूप भूतभावन कह्याजावैहै ॥ इसप्रकार तिन सर्वभूतोंका उपादानकारणरूप तथानिमित्तकारणरूपहुआभी सोहमारा सच्चिदानंदस्वरूप वास्तवतैं असंगअद्वितीयस्वरूपहोणेतैं तिनभूतोंविषेस्थितहैनहीं॥ अर्थात् जैसे स्वप्नद्रष्टापुरुष वास्तवतैं तिनकल्पितस्वप्नपदार्थोंका संबंधीहोवैनहीं ॥ तैसे सोहमारास्वरूपभी वास्तवतैं इनकल्पितभूतोंकासंबंधीहोवैनहीं ॥ ईहां (ममआत्मा) इस वचनविषे जोषष्ठीविभक्तिहै॥ सोभेदकी कल्पनाकरिकैहै ॥जैसे राहोःशिरः इसवचनविषे राहुशिरकेअभेदहुएभी भेदकीकल्पनाकारिकै षष्ठीविभक्तिहै इति ॥५॥ ❀ तहांपूर्वश्लोकविषे श्रीभगवान्नैं यहअर्थ कथनकऱ्या ॥ जो मैंपरमेश्वरका तथाइनसर्व भूतोंका वास्तवतैं कोईभीसंबंधहैनहीं ॥ तौभी मैंपरमेश्वर इनभूतोंविषे स्थितहुं ॥ तथा यहसर्वभूत मैंपरमेश्वरविषे स्थितहैं ॥ इसभगवान्केकहणेविषे अर्जुनकी यहशंका प्राप्तभई ॥ जो आपपरमेश्वरका तथाइनभूतोंका वास्तवतैं कोईसंबंधनहीहै ॥ तौं आपपरमेश्वरका तथाइनभूतोंका परस्पर अधारआधेयभाव कैसेहोवैगा ऐसीअर्जुनकीशंकाकेनिवृत्तकरणेवासतै श्रीभगवान् वास्तवतैं परस्परसंबंधतैंरहितपदार्थोंकेभी आधारआधेयभावकूं लोकप्रसिद्धदृष्टांतकरिकै कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०)यथाकाशस्थितोनित्यंवायुःसर्वत्रगोमहान् । तथासर्वाणिभूतानिमत्स्थानीत्युपधारय॥६॥यथा । आकाशस्थितः । नित्यं । वायुः । सर्वत्रगः । महान् । तथा । सर्वाणि । भूतानि । मत्स्थानि । इति । उपधारय ॥ ६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जैसे सर्वदिशावोंविषेगमनकरणेहारा तथामहत्परिमाणवाला तथासदा चलनस्वभाववालावायु आकाशविषेस्थितहैं तैसैं यहसर्व भूतं मैंपरमेश्वरविषेस्थितहैं इसप्रकार तू निश्चयकर ॥ ६ ॥ ॥(इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसेपूर्वादिकसर्वदिशावोंविषेगमनकरणेहारा तथामहत्परिमाणवाला तथाउत्पत्तिस्थितिसंहारकालविषे चलनस्वभाववाला वायु असंगस्वभाववालेआकाशविषे स्थितहोवैहै ॥ परंतु सोवायु तिसअसंगआकाशकेसाथि वास्तवतैं कदाचित्भी संबंधकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ तैसे असंगस्वभाववाले मैंपरमेश्वरविषे संबंधतैंविनाहीं यहआकाशादिकसर्वभूत स्थितहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे असंगस्वभाववाले आकाशविषे वास्तवतैं वायुकासंबंध नहींभीहै ॥ तौभी सोवायु आकाशविषेस्थित कह्याजावैहै ॥ तैसे असंगस्वभाववाले मैंपरमेश्वरविषे वास्तवतैं इनआकाशादिकभूतोंकासंबंध नहींभीहै ॥ तौभी यहआकाशादिकभूत मैंपरमेश्वरविषेस्थित कहेजावैहैं ॥ इसप्रकारवास्तवतैं संबंधकेअभावहुएभी मैंपरमेश्वरविषेतौं इसकल्पितप्रपंचकीआधारताकूं तथाइसकल्पितप्रपंचविषे मैंपरमेश्वरकीआधेयताकूं तूं इसआकाशकेदृष्टांतसैं विचारकरिकैं निश्चयकर इति ॥ किंवा ॥ (असंगोह्ययंपुरुषः । असंगोनहिसज्जते ।) इत्यादिकअनेक श्रुतियां प्रत्यक्अभिन्नअसंगब्रह्मविषे आकाशादिकसर्वभूतौंकेसंबंधका निषेधकरेहैं ॥ तिनश्रुतियोंविषे अविश्वासकरिकै जोवादी तिसब्रह्मविषे आकाशादिक भूतोंकेसंबंधकूं अंगीकारकरेहै ॥ तावादीसैं यहपूछाचाहिये ॥ तिसअसंगब्रह्मविषे तेभूत संयोगसंबंधकरिकैरहेहैं ॥ अथवा समवायसंबंधकरिकैरहेहैं ॥ अथवा तादात्म्यसंबंधकरिकैरहेहैं ॥ तहां प्रथम संयोगपक्षविषेभी ब्रह्मका तथाभूतोंका सर्वओरतैंसंयोगहै ॥ अथवा एकदेशकरिकैसंयोगहै ॥ तहां प्रथम सर्वओरतैं संयोगतौं बनैंनहीं ॥ काहेतैं ब्रह्मतौंअपरिच्छिन्नहै और तेभूत परिच्छिन्नहैं॥ तिनपरिच्छिन्नभूतोंका अपरिच्छिन्नब्रह्मकेसाथि सर्वओरतैंसंयोग बनैंनहीं॥ तैसेएकदेश करिकै संयोगहै यहद्वितीयपक्षभी संभवैनहीं ॥ काहेतैं जेपदार्थ सावयवहोवैहैं ॥ तिनपदार्थोंकाहीं आपसमैं एकदेशकरिकैसंयोगहोवैहै ॥ जैसे वृक्ष वानर दोनोंका आपसमैं एकदेशकरिकैसंयोगहै ॥ और ब्रह्मतौं निरवयवहै ॥ यातैं तानिरवयवब्रह्मका तथातिनभूतोंका एकदेशकरिकैभी संयोगसंभवैनहीं ॥ और ताब्रह्मविषे तेआकाशादिकभूत समवायसंबंधकरिकैरहेहै यहद्वितीयपक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभीसंभवतानहीं ॥ काहेतैं गुणगुणीका तथाजातिव्यक्तिका तथाअवयवी अवयवकाहीं वादीयोंनैं समवायसंबंध अंगीकारकऱ्याहै ॥ सोईहां तिनभूतोंका तथाब्रह्मका गुणगुणीभाव तथाजातिव्यक्तिभाव तथाअवयवीअवयवभाव हैनहीं ॥ यातैं ताब्रह्मविषे तिनभूतोंकी समवायसंबंधकरिकैभीस्थिति संभवैनहीं ॥ और ताब्रह्मविषे तेभूत तादात्म्यसंबंधकरिकैरहेहैं यहतीसरापक्ष जोवादी अंगीकारकरै ॥ सोभीसंभवैनहीं॥ काहेतैं ब्रह्मतो सत् चित् आनंद परिपूर्ण स्वरूपहै॥ औरते आकाशादिकभूततौं असत् जड दुःख परिच्छिन्न स्वरूप है ॥ ऐसे विरुद्धस्वभाववाले तिनआकाशादिकभूतोंका ताब्रह्मविषे तादात्म्यसंबंध संभवतानहीं ॥ यातैं परिशेषतैं तिनआकाशादिकभूतोंका ताब्रह्मविषे अध्यासरूपकल्पितसंबंधहीं अंगीकारकरणाहोवैगा सोतौं हमारेकूंभी इष्टहै ॥ काहेतैं जिसअधिष्ठानविषे जोपदार्थ अध्यस्तहोवैहै ॥ सोकल्पितपदार्थ तिसअधिष्ठानविषे

नाममात्रहींहोवैहै ॥ वास्तवतैंहोवैनहीं ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पितसर्प तथाशुक्तिविषेकल्पितरजत नाममात्रहींहै ॥ वास्तवतैंहैनहीं ॥ तैसे ब्रह्मविषेअध्यस्तते आकाशादिकभूतभी नाममात्रहींहै ॥ वास्तवतैंहैंनहीं ॥ ऐसेकल्पितभूतोंके अध्यासरूपसंबंधकेहुएभी ताअधिष्ठानब्रह्मकी स्वाभाविकअसंगरूपता निवृत्तहोवैनहीं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं इसश्लोकका यहअर्थ कथनकरयाहै ॥ पूर्वअष्टमअध्यायविषे किं तद्ब्रह्म अर्थयह सोब्रह्म कौंनहै इसप्रश्नका (अक्षरंपरमंब्रह्म) अर्थयह अक्षरनामा शुद्धत्वंपदार्थहीं निरुपाधिकब्रह्महै यहउत्तर कथनकरयाथा ॥ सोनिरुपाधिकब्रह्महीं ईहां (मयाततमिदंसर्वम्) इत्यादिकश्लोकोंकरिकै प्रतिपादनकऱ्याहै ॥ अबतिसनिरुपाधिकब्रह्मका अक्षरनामजीवकेसाथि अभेदकूं दृष्टांतकरिकैकथनकरेहैं (यथाकाशस्थितःइति) ईहां (वायुः) इसशब्दकरिकै सूत्रात्मा काग्रहणकरणा ॥ काहेतैं (वायुर्वैगौतमसूत्रम्) इसश्रुतिविषे तासूत्रात्माकूं वायुनामकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ कैसाहै सोसूत्रात्मारूपवायु सर्वत्रगहै ॥ अर्थात् समष्टिलिंगदेहरूपहोणेतैं सर्वत्रव्यापकहै ॥ पुनःकैसाहैसोवायु महान्है अर्थात् इसबाह्यवायुतैंविलक्षणहै ॥ ऐसासूत्रात्मारूपवायु जैसे नित्यहीं स्वकारणीभूत अव्याकृतनामाआकाशविषे स्थितहै॥ईहां (नित्यम्) इसशब्दकरिकै तासूत्रआत्माका तीनकालविषे ताअव्याकृतनामाआकाशकेसाथि संबंध कथनकऱ्या ॥ तैसे यहसर्वभूत मैंपरमेश्वरविषेस्थितहैं॥ईहां भूतशब्दकरिकै उपाधितैंरहितत्वंपदार्थरूपजीवचेतनका ग्रहणकरणा॥सोजीवचेतन यद्यपि वास्तवतैं एकहींहै॥ तथापि लोकदृष्टिकरिकै श्रीभगवान्नैं ताजीवचेतनकाबहुतपणा कथनकऱ्याहै॥तात्पर्ययह ॥ जैसे सर्वकार्य आपणीउत्पत्तितैंपूर्व तथानाशतैंअनंतर तथाआपणीस्थितिकालविषे आपणे उपादानकारणविषेहीं अभेदरूपकरिकै स्थितहोवैहैं ॥ तैसे यहसर्वजीव अंतःकरणादिकउपाधिकी उत्पत्तितैंपूर्व तथाउपाधिकेनाशतैंअनंतर तथामध्यविषे तिसपरब्रह्मतैं भिन्ननहींहैं ॥ किंतु अभिन्नहींहैं ॥ जैसे घटाकाश घटरूपउपाधिकीउत्पत्तितैंपूर्व तथाघटरूपउपाधिकेनाशतैंअनंतर तथाताघटरूपउपाधिकेविद्यमानकालविषे महाकाशतैंभिन्ननहींहै ॥ किंतु सोघटाकाश तीनोंकालविषे महाकाशरूपहींहै ॥ तैसे यहजीवभी तीनोंकालविषे परब्रह्मरूपहींहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (अयमात्माब्रह्म। अहंब्रह्मास्मि) ॥ अर्थयह ॥ यहप्रत्यक्आत्मा ब्रह्मरूपहै ॥ और मैंब्रह्मरूपहूं इति ॥ ६ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे इसप्रपंचकीउत्पत्तिकालविषे तथास्थितिकालविषे ताप्रपंचकेसाथिअसंगआत्माका असंबंध कथनकऱ्या ॥ अब प्रलयकालविषेभीताप्रपंचकेसाथि असंगआत्माकेअसंबंधकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) सर्वभूतानिकौंतेयप्रकृतिंयांतिमामिकाम् ॥ कल्पक्षयेपुनस्तानिकल्पादौविसृजाम्यहम् ॥ ७ ॥ सर्वभूतानि । कौंतेय । प्रकृतिं । यांति । मामिकाम् । कल्पक्षये । पुनः । तानि । कल्पादौ । विसृजामि । अहम् ॥ ७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेकौंतेय

प्रलयकालविषे यहसर्वभूत मैंपरमेश्वरकीशक्तिरूप जात्रिगुणात्मकप्रकृतिकूं प्राप्तहोवैहैं पुनः सृष्टिकालविषे मैंपरमेश्वर तिनंभूतोंकूं उत्पन्नकरूंहूं ॥ ७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकीशक्तिरूपकरिकैकल्पनाकरीहुई जात्रिगुणात्मकमायाहै ॥ जामाया (मायांतुप्रकृतिंविद्यात्) इसश्रुतिनैं सर्वजगत्का प्रकृतिरूपकरिकैकथनकरीहै ॥ ऐसीकारणरूपमायाप्रकृतिकूंहीं तेआकाशादिकसर्वभूत प्रलयकालविषे प्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् तेआकाशादिकसर्वभूत ताप्रलयकालविषे आपणेकारणभूत मायानामाप्रकृतिविषेहींसूक्ष्मरूपकरिकै लयभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ हेअर्जुन जेआकाशादिकसर्वभूत प्रलयकालविषे ताप्रकृतिविषे अविभागकूंप्राप्त हुएथे ॥ तिनआकाशादिकभूतोंकूंहीं मैंसर्वशक्तिसंपन्नसर्वज्ञपरमेश्वर सृष्टिकालविषे भिन्नभिन्न करिकैउत्पन्नकरूंहूं इति ॥ ७ ॥ ❀ ॥ तहां परमेश्वरकी यहआकाशादिकप्रपंचकीसृष्टि किसप्रयोजनवासतैहै ॥ तिसपरमेश्वरकेहीं भोगवासतैहै ॥ अथवा अन्यकिसीकेभोगवासतैहै ॥ तहां परमेश्वरकेभोगवासतैतौं यह सृष्टि संभवतीनहीं ॥ काहेतैं सर्वकासाक्षीरूप तथाचैतन्यमात्ररूप जोपरमेश्वरहै ॥ तापरमेश्वरविषे सुखदुःखकाभोक्तापणा संभवैनहीं ॥ जोकदाचित् परमेश्वर विषेभी सुखदुःखकाभोक्तापणा अंगीकारकरीये ॥ तौं तिसपरमेश्वरविषेभी अस्मदादिकजीवोंकीन्यांई संसारीपणाहीं प्राप्तहोवैगा ॥ यातैं तापरमेश्वरविषे ईश्वरपणा नहींरहैगा ॥ काहेतैं जिसविषे संसारीपणा रहेहै तिसविषे ईश्वरपणा रहैनहीं ॥ और जिसविषे ईश्वरपणा रहेहै तिसविषे संसारीपणा रहैनहीं ॥ यातैं परमेश्वरकेभोगवासतैतौं यहसृष्टि संभवतीनहीं और परमेश्वरतैंअन्यकिसीभोकावासतै यहसृष्टिहै ॥ यहदूसरापक्षभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं (नान्योतोऽस्तिद्रष्टा) इत्यादिकश्रुतियोंनैं तिसपरमेश्वरतैंभिन्न दूसरेचेतनकाअभावहीं कथनकन्याहै ॥ और जोकोई यहकहै ॥ तिसपरमेश्वरतैं जीवचेतनभिन्नहै ॥ सोकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं (अनेनजीवेनात्मनानुप्रविश्यनामरूपेव्याकरवाणि) इत्यादिकश्रुतियोंनैं तिसपरमेश्वरकीहीं सर्वत्र जीवरूपकरिकैस्थितिकथनकरीहै ॥ याकारणतैंहीं तत्त्वमसि अहंब्रह्मास्मि इत्यादिकमहावाक्य इसजीवकूं ब्रह्मरूपकरिकैकथनकरेहैं ॥ यातैं तिसपरमेश्वरतैंभिन्न दूसराकोईचेतनहैनहीं जोइसजगत्काभोक्ताहोवै ॥ यद्यपि तिसचैतन्यस्वरूप परमेश्वरतैं जडपदार्थभिन्नहैं ॥ तथापि तिनजडपदार्थोंविषे सुखदुःखकाभोक्तापणाहीं संभवतानहीं ॥ किंवा तेसर्वजडपदार्थ भोग्यरूपहींहैं ॥ तिनभोग्यपदार्थोंकूं जोभोक्तामानीये तौं भोक्ता भोग्य यहभेद सिद्धनहींहोवैगा ॥ यातैं तिनजडपदार्थोंकेभोगवासतैभी यहसृष्टि संभवतीनहीं ॥ किंवा जैसे यहसृष्टि किसीकेभोगवासतै नहींसंभवैहै ॥ तैसे यहसृष्टि किसीके मोक्षवासतैभी संभवतीनहीं ॥ काहेतैं जोकोईबंध वास्तवतैंहोवै तौं ताकेमोक्षवासतै यहसृष्टिसंभवै ॥ सो वास्तवतैं कोईबंधनहीं नहींहै ॥ किंवा यहसृष्टि तामोक्षका उलटा विरोधीहीं है ॥ जो जिसकाविरो

धीहोवैहै ॥ सो तिसकीप्राप्तिवासतैहोवैनहीं ॥ यातैं किसीकेमोक्षवासतैभी यहसृष्टि संभवतीनहीं ॥ इसतैंआदिलैके अनेकप्रकारकी अनुपपत्तियां इससृष्टिविषे प्राप्तहोवैहैं ॥ तेअनुपपत्तियांहीं इससृष्टिविषे . मायामयत्वकीसिद्धि करेहैं ॥ यातैं तेअनुपपत्तियां हमसिद्धांतियोंकूं प्रतिकूलनहींहै ॥ किंतु अनुकूलहींहै इसी कारणतैंहीं तेअनुपपत्तियां परिहारकरणेंकूं योग्यनहींहै ॥ इसीसर्वअभिप्रायकरिकै श्रीभगवान् इसप्रपंचविषे मायामयत्वहेतुतैं मिथ्यात्वसिद्धकरणेका आरंभकरेहै तीनश्लोकोंकरिकै ॥

(मू० श्लो०) प्रकृतिंस्वामवष्टभ्यविसृजामिपुनःपुनः ॥ भूतग्राममिमंकृत्स्नमवशंप्रकृतेर्वशात् ॥ ८ ॥ प्रकृतिं । स्वाम् । अवष्टभ्य । विसृजामि । पुनः । पुनः । भूतग्रामम् । इमं । कृत्स्नम् । अवशं । प्रकृतेः । वशात् ॥ ८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वर आपणी मायारूपप्रकृतिकूं आश्रयणकरिकै तिसमायाके प्रभावतैं उत्पन्नहुए इस संपूर्ण आकाशादिकभूतोंकेसमुदायकूं पुनः पुनः उत्पन्नकरूंहूं ॥ ८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरविषेकल्पित तथामैंपरमेश्वरकेअधीन ऐसीजा मायानामा अनिर्वचनीयप्रकृतिहै ॥ तिसआपणीप्रकृतिकूंआश्रयकरिकै अर्थात् ताप्रकृतिकूं आपणीसत्तास्फूर्त्तिकीप्राप्तिद्वाराढढकरिकै मैंमायावीपरमेश्वर प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंकरिकैसिद्ध इसआकाशादिकभूतोंकेसमुदायरूपप्रपंचकूं जीवोंकेकर्मोंके अनुसार विविधप्रकारतैं उत्पन्नकरूंहूं ॥ अर्थात् जैसे स्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नप्रपंचकूं कल्पनामात्रकरिकै उत्पन्नकरेहै ॥ तैसे मैंपरमेश्वरभी इसआकाशादिकप्रपंचकूं कल्पनामात्रकरिकैउत्पन्नकरूंहूं ॥ कैसाहैयहआकाशादिकभूतोंकासमुदाय ॥ प्रकृतिकेवशतैंजायमानहै ॥ अर्थात् मायारूपप्रकृतिकाजो अविद्यादिकपंचक्लेशोंका कारणीभूत आवरणविक्षेपशक्तिरूपप्रभावहै तिसप्रभावतैं उत्पन्नहुआहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ (अवशंप्रकृतेर्वशात्) इसवचनका यहअर्थकऱ्याहै ॥ आपणेस्वभावकानामप्रकृतिहै ॥ तास्वभावरूपप्रकृतिकेवशतैं यहप्रपंच अवशहै ॥ अर्थात् रागद्वेषादिकोंकेअधीनहै इति ॥ और अन्यकिसीटीकाविषे इसवचनका यहअर्थकऱ्याहै ॥ अविद्या अस्मिता राग द्वेष अभिनिवेश यहपंचक्लेश ईहां प्रकृतिशब्दकरिकैग्रहणकरणे ॥ ताअविद्यादिपंचक्लेशरूपप्रकृतिके वशात् कहिये स्वभावतैं यहभूतसमुदाय अवशहै अर्थात् अस्वतंत्रहै ॥ इति ॥ ८ ॥ ❀ ॥ जिसकारणतैं इसजगत्की सृष्टिस्थितिआदिककर्म स्वप्नकीन्यांई मिथ्याभूतहीं हैं ॥ तिसकारणतैं तेसृष्टिआदिककर्म स्वप्नद्रष्टापुरुषकीन्यांई मैंपरमेश्वरकूं बंधायमानकरतेनहीं ॥ इसअर्थकूं अबश्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) नचमांतानिकर्माणिनिबध्नंतिधनंजय ॥ उदासीनवदासीनमसक्तंतेषुकर्मसु ॥ ९ ॥ नं । च । माम् । तानि । कर्माणि ।

निबध्नंति । धनंजय । उदासीनवत् । आसीनम् । असक्तं । तेषु । कर्मसु ॥ ९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन उदासीनपुरुषकीन्यांई स्थित तथा तिनं कर्मोंविषे आसक्तितैंरहित मैंपरमेश्वरकूं ते सृष्टिआदिककर्म नंहीं बंधायमानकरते ॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसे मायावीपुरुष आपणीमायाकरिकै अनेकपदार्थोंकी सृष्टि स्थिति लयकूं करेहै ॥ परंतु ते सृष्टिस्थितिलयरूपकर्म तिसमायावीपुरुषकूं बंधायमानकरतेनहीं ॥ और जैसे स्वप्नद्रष्टापुरुष स्वप्नविषे अनेकपदार्थोंकी सृष्टि स्थिति लयकूं करेहै॥परंतु तेसृष्टिस्थितिलयरूपकर्म तिसस्वप्नद्रष्टापुरुषकूं बंधायमानकरतेनहीं ॥ तैसे मैंपरमेश्वरभी आपणीमायाशक्तिकेवशतैं इसआकाशादिकप्रपंचकी सृष्टि स्थिति लयकूं करूंहूं॥परंतु तेसृष्टिआदिककर्म मैंपरमेश्वरकूं बंधायमानकरतेनहीं ॥ अर्थात् तेसृष्टिआदिककर्म अनुग्रहकरिकै ॥ मैंपरमेश्वरकूं सुकृतकाभागीनहींकरेहैं तथा निग्रहकरिकै हमारेकूं दुष्कृतकाभागीनहींकरेहैं॥जिसकारणतैं तेसृष्टिआदिककर्म स्वप्नकीन्यांईमिथ्याभूतहींहैं ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेसृष्टिआदिककर्म आपकूं किसवासतै नहींबंधायमानकरते ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकेविषेहेतुकहेहै (उदासीनवदासीनमिति) हेअर्जुन परस्पर विवादकरणेहारेदोपुरुषोंकेजयअजयरूपकर्मकेसंबंधतैंरहित तथादोनोंकीउपेक्षाकरणेहारा जो कोईउदासीनपुरुषहै ॥ सोउपेक्षकउदासीनपुरुष जैसे तिनविवादकरतापुरुषोंके जयअजयकृतहर्षविषादतैंरहितहुआ निर्विकाररूपतैंस्थितहोवैहै ॥ तैसे मैंअसंगपरमेश्वरभी सर्वदा निर्विकाररूपकरिकैस्थितहूं ॥ यद्यपि ईहां परमेश्वररूपदार्ष्टांतिकविषे उदासीनपुरुषरूपदृष्टांतकीन्यांई विवादकरणेहारेदोनोंका अभावहै ॥ तथापि तादृष्टांतविषे तथादार्ष्टांतिकविषे उपेक्षकपणा समानहींहै ॥ ताउपेक्षकपणेमात्रकूंलेके ईहां (उदासीनवत्) इसवचनकेअंतविषे वत् यहप्रत्यय कथनकरयाहै ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं मैंपरमेश्वर उदासीनपुरुषकीन्यांई हर्षविषादादिकविकारोंतैंरहितहुआस्थितहूं ॥ तिसकारणतैं मैंपरमेश्वर तिनसृष्टिआदिककर्मोंविषे असक्तहूं ॥ अर्थात् मैं इसकर्मकूंकरताहूं तथामैं इसकर्मकेफलकूंभोगेंगा याप्रकारके कर्तृत्वअभिमानरूप तथाफलकीअभिलाषारूप संगतैं रहितहूं ॥ याकारणतैंहीं मैंपरमेश्वरकूं तेसृष्टिआदिककर्म बंधायमानकरतेनहीं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ बोधनकरया ॥ जैसे कर्तृत्वअभिमानतैंरहित तथाफलकीइच्छातैंरहित मैंपरमेश्वरकूं तेसृष्टिआदिककर्म बंधायमानकरतेनहीं ॥ तैसे दूसराभीजोकोईअधिकारीपुरुष ताकर्तृत्वअभिमानतैं तथाफलकीइच्छातैं रहितहोइके कर्मोंकूंकरेहै ॥ तिसपुरुषकूंभी तेलौकिकवैदिककर्म बंधायमानकरतेनहीं ॥ ताकर्तृत्वअभिमान तथाफलकीइच्छा दोनोंके विद्यमानहुएहीं यहमूढ पुरुष कोशकारजंतुकीन्यांई तिनकर्मोंकरिकैबंधायमानहोवैहै इति ॥ ईहां श्रीभगवाननैं स्वउपदिष्टअर्थकेधारणकरणेविषे अर्जुनकेउत्साहकरणेवासतै (हेधनंजय) इससंबोधनकरिकै ताअर्जुनके महानूप्रभावकूं सूचनकऱ्याहै ॥ अर्थात् युधिष्ठिरराजाके राजसूयनामायज्ञवासतै तूं सर्वराजावोंकूंजीतिकरिकै

धनकूंलेआवताभयाहैं ॥ याकारणतैं तुमारा धनंजय यहनामहुआहै ॥ ऐसेमहानूप्रभाववाला तूं अर्जुनहैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं इसश्लोक का यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् इसलोकविषें कोईप्राणी सुखीहै ॥ कोईप्राणीदुःखीहै ॥ कोईधनीहै कोईदरिद्रीहै कोईबुद्धिमानूहै कोई मूर्खहै ॥ इसप्रकारकीविषमसृष्टिकूंकरणेहारे आपईश्वरकूं विषमतादोषकी तथानिर्दयतादोषकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (नचमांतानिकर्माणि इति) हेअर्जुन तेविषमसृष्टिरूपकर्ममैंपरमेश्वरकूं बंधायमानकरतेनहीं ॥ तिसविषेहेतुकहेहै (उदासीनवदासीनमिति) हेअर्जुन जैसे मेघ किसीबीजोंविषेरागकूं तथाकिसीबीजोंविषे द्वेषकूं नहींकरिकै उदासीनहुआ जलकीवृष्टिकरेहै ॥ आगेतैं तिनतिनबीजोंके अनुसार भिन्नभिन्नफल उत्पन्नहोवैहैं ॥ तैसे मैंपरमेश्वरभी पुण्यवानूपुरुषोंविषे रागकूंनहींकरताहुआ तथापापीपुरुषोंविषे द्वेषकूंनहींकरताहुआ इसजगत्कूं उत्पन्नकरताहूं ॥ आगेतैं तेप्राणी आपणेआपणेपुण्यपापकर्मके अनुसार तिसतिस सुखदुःखादिरूप भिन्नभिन्नफलकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं मैंपरमेश्वरकूं विषमतादोषकीप्राप्ति तथानिर्दयतादोषकीप्राप्ति होवैनहीं इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् पूर्वआपनैं (भूतग्रामंसृजामि) इसवचनकरिकै आपणेकूं सर्वभूतोंका कर्त्तापणा कथनकऱ्या ॥ और (उदासीनवदासीनम्) इसवचनकरिकै आपणेकूं उदासीनपणाकथनकऱ्या ॥ सोयहदोनों आपकेवचन परस्परविरुद्धअर्थके बोधकहोणेतैं असंगतहै ॥ काहेतैं जिसविषे कर्त्तापणा रहेहै ॥ तिसविषे उदासीनपणा रहैनहीं ॥ और जिसविषे उदासीनपणा रहेहै ॥ तिसविषे कर्त्तापणा रहैनहीं ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेनिवृत्त करणेवासतै श्रीभगवान् इसप्रपंचविषे पुनः मायामयत्वकूंहीं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) मयाध्यक्षेणप्रकृतिःसूयतेसचराचरम् ॥ हेतुनानेनकौंतेयजगद्विपरिवर्त्तते ॥ १० ॥ मया । अध्यक्षेण । प्रकृतिः । सूयते । सचराचरं । हेतुना । अनेन । कौंतेय । जगत् । विपरिवर्त्तते ॥ १० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेकौंतेय प्रकाशरूप मैंपरमेश्वरनैं प्रकाशितकरीहुई मायारूपप्रकृतिहीं इसचरअचरसहितजगत्कूं उत्पन्नकरेहै इसीप्रकाशत्व निमित्तकरिकै यहजगत् विविधप्रकारतैंपरिवर्त्तमानहोताहै ॥ १० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन केवलद्रष्टामात्रस्वरूप तथासर्वविकारोंतैंरहित तथाआपणीसमीपतामात्रकरिकैसर्वकानियंता तथासर्वप्रकाशक ऐसाजोमैंपरमेश्वरहूं ॥ तिसमैं परमेश्वरनैं प्रकाशितकरीहुई जामायारूपप्रकृतिहैं ॥ कैसीहैसाप्रकृति ॥ सत्व रज तम यहतीनगुणस्वरूपहैं ॥ तथा जाप्रकृति सत्रूपकरिकै तथाअसत्रूपकरिकै तथासत्असत्उभयरूपकरिकै कथनकरीजातीनहीं ॥ ऐसीमायारूपप्रकृतिहीं इसस्थावरजंगमरूप सर्वजगत्कूं उत्पन्नकरेहै ॥ जैसे मायावीपुरुषनैं प्रवृत्तकरीहुई

माया कल्पित गजतुरंगादिकपदार्थोंकूं उत्पन्नकरेहै ॥ तैसे मैंपरमेश्वरनैं प्रकाशितकरीहुई सामायाहीं इसकल्पितजगत्कूं उत्पन्नकरेहै ॥ मैंपरमेश्वरतौं तिसकार्यसहितमायाकूं केवल प्रकाशमात्रहीं करताहूं ॥ ताकार्यसहितमायाके प्रकाशमात्रतैंभिन्न दूसरेकिसीव्यापारकूं मैंपरमेश्वर करतानहीं ॥ हेअर्जुन तिसप्रकाशकत्वरूप निमित्तकरिकै यहस्थावरजंगमरूपसर्वजगत् विविधप्रकारतैं परिवर्त्तमानहोवैहै ॥ अर्थात् यहजगत् जन्मतैंआदिलैके विनाशपर्यंत अनेक प्रकारकेविकारोंकूं निरंतर प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं (भूतग्राममंसृजामि) अर्थ मैंपरमेश्वर इससर्वजगत्कूंउत्पन्नकरताहूं यहजोवचन हमनैं पूर्वकथनकऱ्याथा ॥ सो तिसजगत्काकारणरूप मायाका प्रकाशकत्वमात्ररूपव्यापारकरिकै कथनकऱ्याथा ॥ और जैसे इसलोकविषे सूर्यादिकोंकेप्रकाशकरिकैहींसर्वकार्योंकी उत्पत्तिहोवैहै ॥ परंतु ताप्रकाशकत्वमात्रकरिकै तिनसूर्यादिकोंकूं कर्त्तापणा प्राप्तहोवैनहीं ॥ तैसे ताकारणरूपमायाकेप्रकाशकत्वमात्रकरिकै मैंपरमेश्वरविषेभी सोकर्त्तापणा प्राप्तहोवैनहीं ॥ याअभिप्रायकरिकैहीं पूर्वहमनैं (उदासीनवदासीनम्) यहवचन कथनकऱ्याथा ॥ यातैं तिनपूर्वउक्तदोनोंवचनोंका परस्पर विरोधहोवै नहीं ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (अस्यद्वैतेंद्रजालस्य यदुपादानकारणम् ॥ अज्ञानंतदुपाश्रित्यब्रह्मकारणमुच्यते) ॥ अर्थयह ॥ इसद्वैतप्रपंचरूपइंद्रजालका जो अज्ञानरूपउपादानकारणहै ॥ तिसअज्ञानकीप्रकाशकताकरिकैहीं ब्रह्म जगत्काकारणकह्याजावैहै ॥ वास्तवतैं सोब्रह्म जगत्काकारणहैनहीं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं इसश्लोकका यहअभिप्राय वर्णनकऱ्याहै ॥ जैसे चुंबकपाषाण आपणीसमीपतामात्रकरिकैं लोहकूं प्रवृत्तकरताहुआभी वास्तवतैं उदासीनहीं रहेहै ॥ तैसे मैंपरमेश्वरभी आपणीसमीपतामात्रकरिकै तिसमायारूपप्रकृतिकूं जगत्कीउत्पत्तिकरणेविषे प्रवृत्तकरताहुआभी वास्तवतैं उदासीनहींरहूंहूं यातै (भूतग्राममंसृजामि उदासीनवदासीनम्) इनदोनोका परस्पर विरोधहोवैनहीं इति ॥ १० ॥ ❃ ॥ हेअर्जुन इसप्रकार नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव तथा सर्वप्राणीयोंकाआत्मारूप तथाआनंदघन तथादेशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित ऐसेभीमैंपरमेश्वरकूं यह अविवेकीलोक मनुष्यमानिकै आदरकरतेनहीं उलटनिंदाकरेहैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू॰श्लो॰) अवजानंतिमांमूढामानुषींतनुमाश्रितम् ॥ परंभावमजानंतोममभूतमहेश्वरम्॥११॥अवजानंति । मां । मूढाः । मानुषीं । तनुम् । आश्रितं । परं । भावम् । अजानंतः । मम । भूतमहेश्वरम् ॥ ११ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन अविवेकीजन मैंपरमेश्वरके सर्वभूतोंकामहान्ईश्वररूप सर्वतैंउत्कृष्ट पारमार्थिकतत्वकूं नजानतेहुए इसमनुष्य मूर्त्तिकूं धारणकरणेहारे मैंपरमेश्वरकूं अनादरकरेहै ॥ ११ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन विचारतैंरहित जेमूढपुरुषहैं ॥ तेमूढपुरुष मैंपरमेश्वरकीभी अवज्ञाकरेहैं ॥ अर्थात् तेमूढपुरुषमैंपरमेश्वरकूं यहकृष्णभगवान् साक्षात् ईश्वरहै याप्रकारतें आदरकरतेनहीं ॥ उलटा हमारीनिंदाकरतेहैं ॥अब तिनमूढपुरुषोंनैं करीहुईअवज्ञाविषे तिनमूढपुरुषोंकीभ्रांतिरूपहेतुकूं कथनकरेहैं (मानुषींतनुमाश्रितम् इति) हेअर्जुन मनुष्यरूपकरिकैप्रतीतहोतीजोयहमूर्तिहै ॥ तिसमूर्तिकूं मैंपरमेश्वर आपणीइच्छाकरिकै भक्तजनोंकेअनुग्रहवासतैग्रहणकरताभयाहुं ॥ अर्थात् मनुष्यरूपकरिकैप्रतीतहुएइसदेहकरिकै मैंपरमेश्वर व्यवहारकूंकरताहूं ॥ याकारणतैंहीं यहकृष्णभी हमारेसरीखा कोईमनुष्यहींहै याप्रकारकीभ्रांतिकरिकै आवृत्त हुआहैंअंतःकरणजिनोंका ऐसेतेमूढपुरुष मैंपरमेश्वरके परमभावकूं नहींजानतेहुए अर्थात् मैंपरमेश्वरके सर्वतैंउत्कृष्ट पारमार्थिकतत्त्वकूं नहींजानतेहुए जोपरमेश्वरका आदरनहींकरेहैं तथामैंपरमेश्वरकीनिंदाकरेहैं ॥ सो तिनमूढपुरुषोंविषे संभवताहीहै ॥ हेअर्जुन जिसहमारेपरमभावकूंनहींजानतेहुए तेमूढपुरुष हमारीअवज्ञाकरेहै॥ सोहमारा परमभावकैसाहै ॥ सर्वभूतोंका महान्ईश्वरहै ॥ अर्थात् तिनसर्वभूतोंका नियंताहै इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ हेअर्जुन इसप्रकार मैंपरमेश्वरकीअवज्ञाकरिकैउत्पन्नभयाजोमहान्पापहै ॥ तापापकरिकैप्रतिबद्धहुईहैबुद्धिजिनोंकी ऐसे तेमूढपुरुष निरंतर नरकविषेहीं निवासकरणेकूं योग्यहोवैहैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) मोघाशामोघकर्माणोमोघज्ञानाविचेतसः ॥ राक्षसीमासुरींचैवप्रकृतिंमोहिनींश्रिताः ॥ १२ ॥ मोघाशाः । मोघकर्माणः । मोघज्ञानाः । विचेतसः । राक्षसीम् । आसुरीं । च । एव । प्रकृतिम् । मोहिनीम् । श्रिताः॥१२॥(इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन निष्फलहैआशाजिनोंकी तथानिष्फलहैकर्मजिनोंके तथानिष्फलहैज्ञानजिनोंका ऐसेविचारहीनेंपुरुष राक्षसी तथा आसुरी तथा मोहिनी प्रकृतिकूं हीं आश्रयणकरेहैं ॥ १२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अंतर्यामीईश्वरतैंविना केवलकर्महीं हमारेकूंफलकीप्राप्तिकरैंगे इसप्रकारकी निष्फलहींहै फलकीप्रार्थनारूपआशा जिनोंकी तिनोंकानाम मोघ आशाहै ॥ तात्पर्ययह॥ अंतर्यामीसर्वज्ञईश्वरतैंविना जडकर्मोंविषे स्वतंत्र फलदेणेकासामर्थ्यहैनहीं ऐसेअसमर्थकर्मोंतैंहीं फलकेप्राप्तिकीइच्छाकरणी निष्फलहींहै ॥ इसीकारणतैंहीं परमेश्वरतैंविमुखहोणेतैं मोघहैं क्या केवलपरिश्रममात्ररूपहै अग्निहोत्रादिककर्म जिनोंके तिनोंकानाम मोघकर्माहै ॥ अर्थात् परमेश्वरतैंविमुख पुरुषोंके तेअग्निहोत्रादिककर्म केवलपरिश्रमकेहीं हेतुहैं ॥ दूसरेकिसीफलकीप्राप्तिकरतेनहीं ॥ और ईश्वरका नहींप्रतिपादनकरणेहारे जेकुतर्कशास्त्रहैं ॥ तिनशास्त्रों करिकैउत्पन्नहोणेतैं निष्फलहैज्ञानजिनोंका तिनोंकानाम मोघज्ञानाहै ॥ अर्थात् परमेश्वरकाप्रतिपादनहैजिनोंविषे ऐसेजेअध्यात्मशास्त्रहैं ॥ तिनशास्त्रोंकेविचारतैं

उत्पन्नभयाज्ञानहीं इसअधिकारीपुरुषकूं फलकीप्राप्तिकरेहै ॥ और जिनशास्त्रोंविषेपरमेश्वरका प्रतिपादननहींहै उलटापरमेश्वरकाखंडनहै ॥ ऐसेकुतर्कशास्त्रोंकेवि चारतैंउत्पन्नहुआज्ञान इसपुरुषकूं किंचित्मात्रभी फलकीप्राप्तिकरतानहीं ॥ यातैं सोज्ञान निष्फलहींहै ॥ अब इसपूर्वउक्तअर्थविषेहेतुकहेहैं (विचेतसःइति) तहां परमेश्वरकीअवज्ञाकरिकैउत्पन्नभयाजोमहान्पापहै तापापकरिकै प्रतिबद्धहुआहैविवेकविज्ञान जिनोंका तिनोंकानामविचेतस्है ॥ ऐसेविचेतस्होणेतैंहीं तेमूढपुरुष मोघआशा मोघकर्मा मोघज्ञाना होवैहैं ॥ किंवा तेमूढपुरुष मैंपरमेश्वरकीअवज्ञाकेवशतैं राक्षसीप्रकातिकूं तथाआसुरीप्रकृतिकूं तथामोहिनीप्रकृतिकूंहीं आश्रयणकरेहैं ॥ तहां शास्त्रअविहितहिंसाका हेतुभूतजोद्वेषहै सोद्वेषहैप्रधानजिसविषे ऐसीजातामसीप्रकृतिहै ताकानाम राक्षसीप्रकृतिहै ॥ और शास्त्रअविहित विषयभोगोंका हेतुभूतजोरागहै सोरागहैप्रधानजिसविषे ऐसीजाराजसीप्रकृतिहै ताकानाम आसुरी प्रकृतिहै ॥ और सत्शास्त्रजन्यज्ञानतैंभ्रष्टकरणेहारी जाप्रकृ तिहै ताकानाम मोहिनीप्रकृतिहै ॥ ईहां प्रकृतिनामस्वभावकाहै ॥ इसप्रकारकी राक्षसी आसुरी मोहिनी प्रकृतिकूंहीं तेमूढपुरुष आश्रयणकरेहैं ॥ इसीकारण तैंहीं तेमूढपुरुष नरककीप्राप्तिकेद्वारोंकाभागीहोणेतैं निरंतर नरकयातनाकूंहीं अनुभवकरेहै ॥ तेनरककेद्वार शास्त्रविषेयहकथनकऱ्येहै ॥ तहांश्लोक ॥ (त्रिवि धंनरकस्येदंद्वारंनाशनमात्मनः ॥ कामःक्रोधस्तथालोभस्तस्मादेतत्त्रयंत्यजेत्) ॥ अर्थयह ॥ काम क्रोध लोभ यहतीनोंहीं इसपुरुषकूं नरककेप्राप्तिकाद्वारभूत होवैहैं ॥ यातैंयहपुरुष तिनतीनोंका परित्यागकरे इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ तहांपूर्व यहवार्त्ता कथनकरी ॥ जेपुरुष परमेश्वरतैंविमुखहैं ॥ तिनपुरुषोंकी जा फल कीकामनाहै ॥ तथा ताफलकीकामनाकरिकैकऱ्याजो नित्यनैमित्तिककाम्यकर्मोंकाअनुष्ठानहै ॥ तथा तिनकर्मोंकेअनुष्ठानविषेउपयोगीजोशास्त्रजन्यज्ञानहै॥ तेसर्व व्यर्थहींहोवैहैं ॥ यातैं तेपुरुष परलोककेफलतैंतथा ताफलकेसाधनोंतैं शून्यहींहोवैहै ॥ और तिनपुरुषोंकूं इसलोककाभी कोईफल प्राप्तहोतानहीं ॥ जिसकारणतैं तेपुरुष विवेकविज्ञानतैंशून्यहोणेतैं विचेतसूहैं ॥ यातैं तेपरमेश्वरतैंविमुख दीनपुरुष सर्वपुरुषार्थोंतैंभ्रष्टहोणेतैं सर्व प्राणीयोंकूं शोच्यकरणेयोग्यहैं ॥ यहसर्व अर्थ पूर्वकथनकऱ्या ॥ तहां सर्वपुरुषार्थोंकूं प्राप्तहोणेहारे तथानहींशोच्यकरणेयोग्य ऐसेकौंनपुरुषहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ एकपरमेश्वरकेशरणागत कूंप्राप्तहुएपुरुषहीं इसप्रकारकेहैं इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) महात्मानस्तुमांपार्थदैवींप्रकृतिमाश्रिताः ॥ भजंत्यनन्यमनसोज्ञात्वाभूतादिमव्ययम् ॥१३॥ महात्मानः । तु । माम् । पार्थ । दैवीम् । प्रकृतिम् । आश्रिताः । भजंति । अनन्यमनसः । ज्ञात्वा । भूतादिम् । अव्ययम् ॥१३॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुनदैवी

प्रकृतिकूं आश्रयकरणेहारे तथा मैंपरमेश्वरतैं अन्यविषेनहीं है मनंजिनोंका ऐसेमहात्मापुरुष तौ मैंपरमेश्वरकूं सर्वभूतोंकाकारणरूप तथानाशतैं रहित जानिकै भजेहैं ॥ १३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन महानहै आत्मा क्या अंतःकरण जिनोंका तिनपुरुषोंकानाम महात्माहै ॥ अर्थात् अनेकजन्मोंविषेकऱ्येहुएपुण्यकर्मोंकरिकैसंस्कृत तथाक्षुद्र कामादिकविकारोंकरिकैनहीं अभिभवकऱ्याहुआहैअंतःकरण जिनोंका तिनोंकानाम महात्माहै ॥ जिसकारणतैं तेपुरुष महात्माहैं ॥ तिसकारणतैंहीं (अभयंसत्व संशुद्धिः) इत्यादिकवचनोंकरिकै आगेकथनकरणीजा दैवीनामा सात्विकीप्रकृतिहै ॥ तादैवीप्रकृतिकूं आश्रयणकऱ्याहैजिनोंनैं ॥ जिसकारणतैं तिनमहात्मापुरुषों नैं दैवीप्रकृतिकूंआश्रयणकऱ्याहै॥ तिसकारणतैंहीं मैंपरमेश्वरतैंअन्यवस्तुविषेनहींहैमन जिनोंका ऐसेमहात्मापुरुषतौ मैंपरमेश्वरकूं गुरुशास्त्रकेउपदेशतैंसर्वजगत्काकार णरूपजानिकै तथाअविनाशिरूपजानिकै भजेहैं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरका सेवनकरेहैं ॥ ईहां (महात्मानस्तु) यावचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द पूर्वकथनकऱ्येहुए मूढपुरुषोंतैं इनमहात्मापुरुषोंविषे महान्‌विलक्षणताकूं सूचनाकरेहै इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् तेमहात्मापुरुष आपपरमे श्वरकूं किसप्रकारकरिकै भजेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए ॥ श्रीभगवान् ताभजनकेप्रकारकूं दोश्लोकोंकरिकै कथनकरेहै ॥

(मू०श्लो०) सततंकीर्त्तयंतोमांयतंतश्चदृढव्रताः ॥ नमस्यंतश्चमांभक्त्यानित्ययुक्ताउपासते ॥ १४ ॥ सततं । कीर्त्तयंतः । मां । यतंतः । च । दृढव्रताः । नमस्यंतः । च । मां । भक्त्या । नित्ययुक्ताः । उपासते ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तेमहात्मापुरुष सर्वदा मैंपरब्रह्मकूं कीर्त्तनकरतेहुए तथा प्रयत्नकरतेहुए तथा दृढव्रतवालेहुए तथा मैंपरमेश्वरको नमस्कारकरतेहुए तथामैंपरमेश्व रकी भक्तिकरिकै नित्ययुक्तहुए मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरेहैं ॥ १४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तेमहात्मापुरुष सर्वकालविषे मैंपरमात्मादेवकूंहीं कीर्त्तनकरेहैं ॥ अर्थात् सर्वउपनिषदोंकरिकैप्रतिपाद्य जो मैंनिर्गुणपरमात्मादेवहूं ॥ तिस मैंनिर्गुणस्वरूपकूं तेमहात्मापुरुष ब्रह्मवेत्तागुरुकेसमीपजाइकै वेदांतवाक्योंकेविचारकरिकै कीर्त्तनकरेहै ॥ और तागुरुकीसमीपतातैंभिन्नकालविषेतौ प्रणवादिकमंत्रोंकेजपकरिकै तथाउपनिषदोंकीआवृत्तिकरिकै कीर्त्तनकरेहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ तेमहात्माजन मैंनिर्गुणब्रह्मकूं सर्वकालविषे वेदांतशास्त्रके अध्ययनरूपश्रवणव्यापारका विषयकरेहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रवणरूपसाधनकानिरूपणकऱ्या ॥ अबमननरूपसाधनका निरूपणकरेहैं (यतंतः इति) हेअर्जुन पुनः तेमहात्मापुरुष गुरुकेसमीप अथवाअन्यत्र वेदांततैं अविरोधितर्कोंकाअनुसंधानकरिकै गुरूपदिष्टमैंपरमेश्वरकेनिर्गुणस्वरूपकेनिश्चयकूं अप्रामाण्यशंका

तैंरहित करणेवासतैं प्रयत्नकरेहैं ॥ अर्थात् श्रवणकरिकैनिश्चयकऱ्येहुएअर्थके बाधकरणेहारीशंकावोंकूं निवृत्तकरणेहारीतर्कोंका अनुसंधानरूपमननपरायणहोवैहैं॥ इतनैंकहणेकरिकैमननका निरूपणकऱ्या ॥ अब ताश्रवणमननकेअधिकारवासतै शमदमादिकसाधनोंका निरूपणकरेहैं (दृढव्रताःइति) हेअर्जुन तेम हात्मापुरुष तिसश्रवणमननकेअधिकारकीप्राप्तिवासतै प्रथम दृढव्रतहोवैहैं ॥ तहां दृढहैं क्या प्रतिपक्षियोंकरिकैचलायमानकरणेकूंअशक्यहैं अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह इत्यादिकव्रतजिनोंके तिनोंकानाम दृढव्रताहै ॥ अर्थात् तेमहात्मापुरुष शमदमादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नहोवै ॥ तहां अहिंसादिकव्रतों विषे दृढरूपता पतंजलिभगवान्नैंभी योगसूत्रोंविषे कथनकरीहै ॥ तहां सूत्रद्वयम् ॥(अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्यापरिग्रहायमाः॥ जातिदेशकालसमयानवच्छिन्नाः सार्वभौमाः महाव्रतम्) ॥ अर्थयह ॥ अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य अपरिग्रह यहपंच यमकहेजावैहैं इति ॥ तेअहिंसादिकपंचयम क्षिप्त मूढविक्षिप्त इनतीनभूमि कावोंविषेभी संभावनाकऱ्येजावैहैं ॥ यातैं तेपंचयम सार्वभौमा कह्येजावैहैं ॥ ऐसेअहिंसादिकपंचयम जाति देश काल समय इन चारोंकरिकै अनवच्छिन्नहुए महाव्रत कहेजावैहैं ॥ ईहां जातिशब्दकरिकै ब्राह्मणत्वादिकजातिका ग्रहणकरणा ॥ और देशशब्दकरिकै तीर्थादिकउत्तमदेशका ग्रहणकरणा ॥ और कालशब्द करिकै एकादशीअमावास्यादिकपवित्रदिनोंकाग्रहणकरणा ॥ और समयशब्दकरिकै प्रयोजनविशेषका ग्रहणकरणा ॥ तहां ब्राह्मणादिकउत्तमप्राणियोंकूं मैं नहीं हननकरोंगा याप्रकारकासंकल्पकरिकै जो तिनब्राह्मणादिकोंका नहींहननकरणाहै ॥ साअहिंसा जातिकरिकैअवच्छिन्न कहीजावैहै ॥ और तीर्थादिकउत्तमदेश विषे मैं किसीभीप्राणीकाहननननहींकरोंगा याप्रकारकासंकल्पकरिकै जो तिनतीर्थादिकोंविषे किसीभीप्राणीका नहींहननकरणाहै ॥ साअहिंसादेशकरिकैअवच्छि न्न कहीजावैहै ॥ और एकादशीआदिकपवित्रदिनोंविषे मैं किसीभीप्राणीकानहींहननकरोंगा याप्रकारकासंकल्पकरिकै जो तिनएकादशीआदिकोंविषे किसीभीप्रा णीका नहींहननकरणाहै ॥ साअहिंसा कालकरिकैअवच्छिन्न कहीजावैहै ॥ और यज्ञयुद्धादिकप्रयोजनतैंविना मैं किसीभीप्राणीका नहींहननकरोंगा याप्रकारका संकल्पकरिकै जो तिनयज्ञयुद्धादिकप्रयोजनतैंविना किसीभीप्राणीका नहींहननकरणाहै॥ साअहिंसा समयकरिकैअवच्छिन्न कहीजावैहै ॥ इसप्रकार सत्यादिकोंवि षेभी यथायोग्य जातिआदिकोंकरिकैअवच्छिन्नता जानिलेणी ॥ और किसीभीदेशविषे तथाकिसीभीकालविषे तथाकिसीभीप्रयोजनवासतै किसीभीजातिवाले जीवका मैं हनननहींकरोंगा याप्रकारकासंकल्पकरिकैं जो सर्वप्रकारतैं किसीभीप्राणीमात्रका नहींहननकरणाहै ॥ साअहिंसा तिनजातिआदिकचारोंकरिकै अनवच्छिन्न कहीजावैहै ॥ इसीप्रकार सत्यादिकयमोंविषेभी जातिआदिकोंकरिकैअनवच्छिन्नता जानिलेणी ॥ इसप्रकार जातिआदिकोंकरिकैअनवच्छिन्नहु एते अहिंसादिकयम महाव्रत कह्येजावैहैं इति ॥ इनदोनोंयोगसूत्रोंका विस्तारतैंअर्थतौ इसगीताकेचतुर्थअध्यायविषे ॥ (द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञाः) इसश्लोककेव्या

ख्यानविषे कथनकरिआयेहैं ॥ इसप्रकारतैं दृढहैंअहिंसादिकव्रतजिनोंके तिनोंकानाम दृढव्रताहै इति ॥ और तेमहात्माजन मैंपरमेश्वरकूंहीं नमस्कारकरेहैं ॥ अर्थात् तिनमहात्माजनोंका इष्टदेवतारूपकरिकै तथागुरुरूपकरिकैस्थित जो सर्वशुभगुणोंकानिधानरूप मैंभगवान्वासुदेवहूं तिसमैंभगवान्कूंहीं तेमहात्माजन शरीरमनवाणीकरिकै नमस्कारकरेहैं ॥ ईहां (नमस्यंतश्च) इसवचनविषेस्थितजो चकारहै ॥ ताचकारकरिकै शास्त्रांतरविषे प्रसिद्धश्रवणादिकोंकाभी ग्रहण करणा ॥ तहांश्लोक ॥ (श्रवणंकीर्त्तनंविष्णोःस्मरणंपादसेवनम् ॥ अर्चनंवंदनंदास्यंसख्यमात्मनिवेदनम्) ॥ अर्थयह ॥ सर्वत्रव्यापकविष्णुका श्रवणकरणा ॥ तथा कीर्तनकरणा तथा स्मरणकरणा ॥ तथा ताकेपादोंका सेवनकरणा ॥ तथा अर्चनकरणा ॥ तथा वंदनकरणा ॥ तथा दासभावकरणा ॥ तथा सखाभावकरणा ॥ तथा आपणेआत्माका समर्पणकरणा इति ॥ इसश्लोकविषे वंदनभीकथनकर्याहै ॥ सोईहींवंदन श्रीभगवान्नैं (नमस्यंतश्च) यावचनकरिकैकथनकर्याहै ॥ यातैं इसश्लोकविषे तावंदनकेसहवर्त्तणेहारे श्रवणादिकोंका तिसचकारकरिकै ग्रहणसंभवैहै ॥ यद्यपि पुष्पचंदनअक्षतादिकोंकरिकैअर्चन तथापादोंकासेवन साक्षात् ईश्वरकासंभवतानहीं ॥ तथापि सोईश्वरहीं गुरुरूपहोइकै शिष्यकूं उपदेशकरेहै यहवार्त्ता शास्त्रविषे कथनकरीहै ॥ यातैं तागुरुरूपईश्वरका अर्चन तथापादों कासेवन संभवैहै ॥ अथवा (द्वेरूपेवासुदेवस्यचलंचाचलमेवच ॥ चलंसंन्यासिनोरूपमचलंप्रतिमादिकम् ॥) अर्थयह ॥ सर्वत्रव्यापक भगवान्वासुदेवके दोरूपहैं ॥ एकतौं चलणेहारारूपहै ॥ दूसरा अचलरूपहै ॥ तहां संन्यासीकास्वरूप चलरूपहै ॥ और प्रतिष्ठाकरीहुई पाषाणमय अथवाधातुमय प्रतिमाआदिक अचल रूपहै इति ॥ इत्यादिकशास्त्रवचनोंविषे प्रतिमाभी विष्णुकारूपकह्याहै ॥ यातैं ताप्रतिमारूपविष्णुकाअर्चन तथापादसेवन दोनोंसंभवैहैं ॥ इसीकारणतैंहीं शास्त्रविषे तिनदोनोंस्वरूपोंकूं नहींनमस्कारकरणेहारेपुरुषकूं नरककीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (देवताप्रतिमांदृष्ट्वा यतिंदृष्ट्वाचदंडिनम् ॥ प्रणिपात मकुर्वाणोरौरवंनरकंव्रजेत्) ॥ अर्थयह ॥ विष्णुशिवादिकदेवतावोंकी प्रतिमाकूंदेखिकै तथादंडयुक्तसंन्यासीकूं देखिकै जोपुरुष तिनोंकूं नमस्कारनहीं करेहै ॥ सोपुरुष रौरवनरककूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ ईहां (नमस्यंतश्चमाम्) इसवचनविषेजो मां यहपद दूसरीबार कथनकर्याहै ॥ सोसगुणरूपकेबोधनकरणेवास्तै कथनकर्याहै ॥ जोऐसानहींअंगीकारकरिये ॥ तौं (कीर्त्तयंतोमाम्) इसपूर्ववचनविषेस्थित मां शब्दकरिकैहीं अर्थकीसिद्धिहोइसकेहै ॥ पुनः मां यहशब्दकहणा व्यर्थहोवैगा ॥ यातैं प्रथम मां यहशब्द निर्गुणस्वरूपकाबोधकहै ॥ और द्वितीय मां यहशब्द सगुणस्वरूपकाबोधकहै ॥ यहअर्थहीं अंगीकारकरणा उचितहै इति ॥ तथा तेमहात्माजन सर्वदा मैंपरमेश्वरविषयक परमप्रेमरूपभक्तिकरिकैयुक्तहोवैहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै सर्वसाधनोंकीपुष्कलता तथाप्रतिबंधकका‌अभाव दिखाया ॥ अर्थात् जेअधिकारीपुरुष सर्वदा परमेश्वरकीभक्तिकरिकैयुक्तहोवैहैं ॥ तेअधिकारीपुरुष ताभक्तिकेप्रभावतैं सर्वप्रतिबंधकोंतैं रहितहोइकै शीघ्रहीं आत्म

ज्ञानकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥तहांश्रुति॥ (यस्यदेवेपराभक्तिर्यथादेवेतथागुरौ ॥ तस्यैतेकथिताह्यर्थाःप्रकाशंतेमहात्मनः) ॥ अर्थयह ॥ जिसअधिकारीपुरुषकी परमात्मादेवविषे परमभक्तिहै ॥तथा जैसे परमात्मादेवविषे परमभक्तिहै॥ तैसेहीं ब्रह्मउपदेष्टागुरुविषे परमभक्तिहै ॥ तिस महात्माअधिकारी पुरुषकूंहीं यहवेदांतप्रतिपादितअर्थ बुद्धिविषे प्रकाशमानहोवैहैं इति ॥ यहवार्त्ता पतंजलिभगवान्‌नैंभी योगसूत्रोंविषेकथनकरीहै ॥ तहांसूत्रम् ॥ (ततःप्रत्यक्चेतनाधिगमोऽप्यंतरायाभावश्च) ॥ अर्थयह ॥ तिसपरमेश्वरकीअनन्यभक्तिरूप प्रणिधानतैं इसअधिकारीपुरुषकूं प्रत्यक्‌चेतनका साक्षात्कारहोवैहै ॥ तथा सर्व विघ्नोंकाभी अभावहोवैहै इति ॥ इसप्रकार तेमहात्माजन शमदमादिकसाधनोंकरिकैसंपन्नहुए तथावेदांतशास्त्रकेश्रवणमननपरायणहुए तथापरमगुरुरूपपरमेश्वरविषे परमप्रेमकरिकै तथानमस्कारादिकोंकरिकै सर्वविघ्नोंतैंरहितहुए मैंपरमेश्वरकूं उपासनाकरेहैं ॥ अर्थात् श्रवणमननकीपरिपाकतातैं उत्तरभावी जोअनात्माकारविजातीयवृत्तियोंकेव्यवधानतैंरहित मैंपरमेश्वरकेआकार सजातीयवृत्तियोंकाप्रवाहहै ताकरिकै निरंतर मैंपरमेश्वरकूंचिंतनकरेहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्‌नैं तत्त्वसाक्षात्कारकेसमीपहोणेतैं परमसाधनरूप निदिध्यासन दिखाया ॥ इसप्रकार श्रवणादिकसाधनोंकीपुष्कलताकेहुए इसअधिकारीपुरुषविषे वेदांतवाक्यकरिकैजन्य तथाअखंडवस्तुविषयक तथामैंब्रह्मरूपहूं ऐसासाक्षात्काररूप जोआत्मज्ञान उत्पन्नहोवैहै ॥ सो सर्वसाधनोंकाफलभूत आत्मज्ञान संपूर्णशंकारूपीकलंकोंतैंरहितहुआ केवल आपणीउत्पत्तिमात्रकरिकै संपूर्ण अज्ञानकूं तथाताअज्ञानकेकार्यरूपसर्वप्रपंचकूं नाशकरेहै ॥ जैसे दीपक आपणीउत्पत्तिमात्रकरिकैहीं अंधकारकूं नाशकरेहै ॥ ताअंधकारकेनाशकरणेविषे सोदीपक दूसरेकिसीसाधनकीअपेक्षाकरतानहीं ॥ किंतु सोदीपक आपणीउत्पत्तिविषेहीं तेलवर्तीआदिक साधनोंकीअपेक्षाकरेहै ॥ तैसे सोआत्मज्ञानभी ताकार्यसहितअज्ञानकीनिवृत्तिकरणेविषे दूसरेकिसीसाधनकी अपेक्षाकरतानहीं ॥ किंतु सोआत्मज्ञान आपणी उत्पत्तिविषेहीं तिनश्रवणादिकसाधनोंकीअपेक्षाकरेहैं ॥ यातैं सोआत्मज्ञान निरपेक्षहुआहीं साक्षात् मोक्षकाहेतुहै ॥ तामोक्षकीप्राप्तिकरणेविषे सोआत्मसाक्षात्कार भूमिकावोंकेजयक्रमकरिकैभ्रुवोंकेमध्यविषेप्राणोंकेप्रवेशकीभीअपेक्षाकरैनहीं ॥ तथा सुषुम्नानामा मूर्द्धन्यनाडीकरिकै प्राणोंकेउत्क्रमणकी अपेक्षाकरैनहीं ॥ तथा अर्चिरादि मार्गकरिकैब्रह्मलोकविषेगमनकरणेकीभी अपेक्षाकरैनहीं ॥ तथा ताब्रह्मलोककेभोगोंकेअंतकालपर्यंत विलंबकीभी अपेक्षाकरेनहीं ॥ यातैं श्रीभगवान्‌नैं (इदंतुतेगुह्यतमंप्रवक्ष्याम्यनसूयवेज्ञानम्) इसवचनकरिकै जोपूर्व ज्ञानकेउपदेशकीप्रतिज्ञाकरीथी ॥ सोज्ञान इसश्लोकविषे श्रीभगवान्‌नैं कथनकऱ्याहै ॥ और इसआत्मज्ञानकाजो अशुभसंसारतैंमुक्तिरूपफलहै ॥ सोफलतौं श्रीभगवान्‌नैं पूर्वहीं कथनकऱ्याथा ॥ यातैं ईहां पुनः सोफल कथनकऱ्यानहीं ॥ इसप्रकारकागंभीरअभिप्राय श्रीभगवान्‌का इसश्लोकविषेहैं ॥ और इसश्लोकका ऊपरिलाअर्थतौं प्रगटहींहै इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे कथनक

न्येजे तत्त्वज्ञानकेसाधनरूप श्रवण मनन निदिध्यासनहैं ॥ तिनश्रवणादिकोंकेकरणेविषे जेपुरुष समर्थनहींहै ॥ तेपुरुषभी उत्तम मध्यम मंद इसभेदकरिकै तीन प्रकारकेहींहोवैहैं ॥ तेसर्व आपणीआपणीबुद्धिकेअनुसार मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) ज्ञानयज्ञेनचाप्यन्येयजंतोमामुपासते ॥ एकत्वेनपृथक्त्वेनबहुधाविश्वतोमुखम् ॥ १५ ॥ ज्ञानयज्ञेन । चं । अपि । अन्ये । यजंतः । माम् । उपासते । एकत्वेन । पृथक्त्वेन । बहुधा । विश्वतोमुखम् ॥ १५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन अन्यकेईकउत्तम अधिकारीजनतौं ज्ञानरूपयज्ञकरिकै मेरापूजनकरतेहुए केवल एकत्वरूपकरिकै मैंपरमेश्वरकूं हीं चिंतनकरेहैं तथाकेईकमध्यमअधिकारी जनतौं भेदरूपकरिकैहीं चिंतनकरेहैं तथा केईकमंद जनतौं बहुतप्रकारों करिकै मैं विश्वरूप परमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं ॥ १५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वश्लोकविषे कथनकऱ्येजेश्रवणादिकसाधनहैं ॥ तिनश्रवणादिकसाधनोंकेअनुष्ठानकरणेविषे असमर्थ जेकेईक अधिकारीजनहैं ॥ ते अधिकारीजन मैंपरमेश्वरकूंहीं ज्ञानरूपयज्ञकरिकै चिंतनकरेहैं ॥ तिनअधिकारीजनोंविषेभी केईकउत्तमअधिकारीजनतौं केवल एकत्वज्ञानयज्ञकरिकैहीं चिंतनकरेहैं ॥ ईहां श्रुतिविषेंकथनकरीजाउपास्यउपासककाअभेदचिंतनरूप अहंग्रहउपासनाहै ताकानाम ज्ञानहै ॥ तहांश्रुति ॥ (त्वंवाअहमस्मिभगवोदेवतेअहंवैत्वमसि) ॥ अर्थयह ॥ हेभगवन् सगुणदेवता तथानिर्गुणदेवता जोतूंहैं सोमैंहूं ॥ और जोमैंहुं सोतूंहैं ॥ तुमारेहमारेविषे किंचित्मात्रभीभेदनहींहै इति ॥ याप्रकारकीअहंग्रहउपासनारूपज्ञानहीं परमेश्वरका यजनरूपहोणेतें यज्ञरूपहै ॥ ईहां (ज्ञानयज्ञेनचाप्यन्ये) इसवचनविषेस्थितजो च अपि यहदोशब्दहैं ॥ तिनदोनोंशब्दोंविषे प्रथमचशब्दतौं एवकारकेअवधारणरूपअर्थकाबोधकहैं ॥ ताचशब्दका माम् इसशब्दकेसाथि अन्वयकरणा ॥ और दूसरा अपिशब्दतौं दूसरेसाधनोंकीनिवृत्तिका बोधकहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धहोवैहै॥केईकअधिकारीजनतौं दूसरेसाधनोंकीइच्छातैंरहित हुए उपास्यउपासककाअभेदचिंतनरूप अहंग्रहउपासनारूपज्ञानयज्ञकरिकै मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं ॥ इसप्रकार अहंग्रहउपासनारूपज्ञानयज्ञकरिकै मैंपरमेश्वरकूंचिंतनकरणेहारेपुरुष उत्तमकहेजावैहैंइति ॥ और दूसरेकेईक मध्यम अधिकारीजनतौं पृथक्त्वरूपकरिकै मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं ॥ अर्थात् (आदित्योब्रह्मेत्यादेशः मनोब्रह्म) इत्यादिकश्रुतियोंनें कथनकरीजा उपास्यउपासककाभेदरूपप्रतीकउपासनाहै ॥ ताप्रतीकउपासनारूप ज्ञानयज्ञकरिकै मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं इति ॥ और ताअहंग्रहउपासनाकेकरणेविषे तथाप्रतीक उपासनाकेकरणेविषे असमर्थ जेकेईक मंदपुरुषहैं ॥ तेमंदपुरुषतौं जिसीकिसीअन्यदेवताकीउपासनाकूंकरतेहुए तथाजिसीकिसीकर्मोंकूंकरतेहुए तिसतिसबहुत

प्रकारोंकरिकैभी विश्वरूपमैंपरमेश्वरकूंहीं तिसतिसदेवताकीउपासनारूपज्ञानयज्ञकरिकै चिंतनकरेहैं ॥ तहां तिसतिसज्ञानयज्ञकरिकै उत्तरउत्तरपुरुषोंकूं क्रमकरिकै पूर्वपूर्वभूमिकाकालाभ अवश्यकरिकैहोवैहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं इसश्लोकका यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ योगशास्त्रवाले पातंजलतौं निर्विकल्प समाधिरूप ज्ञानयज्ञकरिकै मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं ॥ और औपनिषद्पुरुषतौं मैंहींभगवान्वासुदेवस्वरूपहूं याप्रकार अभेदरूपएकत्वकरिकै मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं ॥ और विचारहीनप्राकृतजनतौ यहईश्वर हमारास्वामीहै मैंइसकादासहूं याप्रकार पृथक्त्वरूपकरिकै मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं ॥ और दूसरेके ईकजनतौ बहुतप्रकारतैं विश्वतोमुख जैसे होवै तैसे हमारेकूंचिंतनकरेहैं अर्थात् जोकोईवस्तु देखणेविषे आवैहै सोवस्तु भगवत्काहीं स्वरूपहै ॥ और जो जोशब्द श्रवणकरणेविषेआवैहै ॥ सोसोशब्द भगवत्काहींनामहै ॥ और जोकोईवस्तु किसीकूंदीयाजावैहै ॥ तथा जोकोईपदार्थ भोग्याजावैहै ॥ सोसर्व भगवत् विषेहीं अर्पणहोवैहै ॥ इसप्रकार सर्वद्वारोंकरिकै मैंपरमेश्वरकाहीं चिंतनकरेहै ॥ १५ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जबी तेपुरुष बहुतप्रकारतैं उपासनाकरेहैं ॥ तबी तेसर्व मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं यह आपकावचन कैसे संगतहोवैगा ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाके हुए श्रीभगवान् च्यारिश्लोकोंकरिकै आपणेकूं विश्वरूपता वर्णनकरेहैं ॥

अहंक्रतुरहंयज्ञःस्वधाहमहमौषधम् ॥ मंत्रोहमहमेवाज्यमहमग्निरहंहुतम् ॥ १६ ॥ अहं । क्रतुः । अहं । यज्ञः । स्वधा । अहम् । अहम् । औषधं । मंत्रः । अहम् । अहम् । एव । आज्यम् । अहम् । अग्निः । अहं । हुतम् ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरहीं क्रतुरूपहूं तथामैंहीं यज्ञरूपहूं तथामैंहीं स्वधारूपहूं तथामैंहीं औषधरूपहूं तथामैंहीं मंत्ररूपहूं तथामैं परमेश्वर हीं आज्यरूपहूं तथामैंहीं अग्निरूपहूं तथामैंहीं हवनरूपहूं ॥ १६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन श्रौतकर्महैनामजिनोंका ऐसेजेअग्निष्टोमादिककर्महैं तिनोंकानाम क्रतुहै ॥ सोक्रतुरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और स्मार्तकर्महैनामजिनोंका ऐसेजे वैश्वदेवादिककर्महैं जिनवैश्वदेवादिकोंकूं श्रुतिस्मृतियोंविषे महायज्ञरूपकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तिन वैश्वदेवादिकस्मार्त्तकर्मोंकानाम यज्ञहै ॥ सोयज्ञरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और पितरोंकेताई दियाजोअन्नहै ताअन्नकानाम स्वधाहै ॥ सोस्वधारूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और वनस्पतिरूपओषधियोंतैं उत्पन्नभयाजोअन्नहै जिसअन्नकूं यहसर्वप्राणी भोजनकरतेहैं ॥ ताअन्नकानाम औषधहै ॥ अथवा रोगकी निवृत्तिका उपायरूपजोभेषजहै ताकानाम औषधहै ॥ सोऔषधरूपभी मैंप मेश्वरहींहूं और स्वाहा स्वधा यह शब्दहैअंतविषेजिनोंके ऐसेजो वेदकेवचनहैं ॥ जिसवचनोंकाउच्चारणकरिकै देवतावोंकेतांई तथापितरोंकेतांई हविष दीयाजा

वैहै ॥ तिनवेदवचनोंकानाम मंत्रहै ॥ जैसे इंद्रायस्वाहा पितृभ्यःस्वधा इत्यादिकमंत्रहैं सोमंत्ररूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और तिनमंत्रोंकरिकै अग्निविषेपायाजोघृतहै ताघृतकानाम आज्यहै ॥ सोघृतरूपआज्य ईहां व्रीहियवादिकसर्वहविषमात्रका उपलक्षणहै ॥ सोघृतादिहविषरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और ताघृतादिरूपहविषकेप्रक्षेपकाअधिकरणरूप जेआहवनीयआदिकअग्निहैं ॥ सोअग्निरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और ताअग्निविषे घृतादिरूपहविष्का प्रक्षेपरूपजोहवनहै ताकानाम हुतहै ॥ सोहवनरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ ईहां यद्यपि एकहींअहंशब्दकेउच्चारणतैं उक्तअर्थकीसिद्धि होइसकेहै ॥ तथापि एकएक क्रतुयज्ञादिकशब्दकेसाथि जो अहंशब्दका उच्चारणकऱ्याहै सो तिनक्रतुयज्ञादिकोंविषे एकएककाज्ञानभी मैंपरमेश्वरकीहीं उपासनाहै इसअर्थके बोधनकरणेवासतै उच्चारणकऱ्याहै तहां इसश्लोकका यहसमुदायअर्थ सिद्धहोवैहै ॥ जितनैंकी क्रियाहैं तथा ताक्रियाकीसिद्धिकरणेहारे कारकहैं तथाताक्रियाकरिकैसाध्य फलहैं तेसर्व क्रियाकारकफल मैंपरमेश्वरकाहीं स्वरूपहैं ॥ मैंपरमेश्वरतैं अतिरिक्त कोईभीक्रियाकारकफलनहींहैं इति ॥ ईहां किसीटीकाविषेतौं क्रतुशब्दकरिकै देवताविषयकध्यानरूपसंकल्पका ग्रहणकऱ्याहै ॥ और यज्ञशब्दकरिकै श्रौतस्मार्त्तकर्मका ग्रहणकऱ्याहै इति ॥ १६ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) पिताहमस्यजगतोमाताधातापितामहः ॥ वेद्यंपवित्रमोंकारऋक्सामयजुरेवच॥१७॥ पिता । अहम् । अस्य । जगतः । माता । धाता । पितामहः । वेद्यं । पवित्रम् । ओंकारः । ऋक् । साम । यजुः । एव । च ॥ १७॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन इस जगत्का पितारूप तथामातारूप तथाधातारूप तथापितामहरूप मैंपरमेश्वरहींहूं तथा वेद्यवस्तुरूप तथापवित्रवस्तुरूप तथाओंकाररूप तथाऋग्वेदरूप सामवेदरूप यजुर्वेदरूप मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ १७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहसर्वप्राणीमात्ररूपजोजगत्है ॥ इसजगत्का उत्पन्नकरणेहारा पितारूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ तथा इसजगत्कूंउत्पन्नकरणेहारी मातारूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ तथा इसजगत्काधातारूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं अर्थात् इसजगत्कापोषणकरणेहारा अथवा तिसतिसपुण्यपापरूपकर्मकेसुखदुःखरूपफलकेदेणेहाराभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और इनप्राणीयोंकेपिताकाभीजोपिताहोवै ताकानाम पितामहहै ॥ सोपितामहरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ ईहांकिसीटीकाविषे जगत्शब्दकरिकै आकाशादिकसर्वकार्यप्रपंचका ग्रहणकरिकै मायाविशिष्टशबलब्रह्मकूं ताजगत्कापितारूपकह्याहै ॥ और अव्यक्तनामा अपराप्रकृतिकूं मातारूपकह्याहै ॥ और मायाउपहितअक्षरकूं पितामहरूप कह्याहै इति ॥ और इसअधिकारीजनोंकूं जानणेयोग्य जोपरब्रह्मवस्तुहै ताकानाम वेद्यहै ॥ सोवेद्यवस्तुरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ अथवा सर्वप्राणीमात्रकरिकै जानणेयोग्य जोशब्दस्पर्शरूपादिकवस्तुहैं तिनोंकानामवेद्यहै ॥ सोवेद्यवस्तुरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और यह

अधिकारीजन जिसकरिकैशुद्धिकूंप्राप्तहोवैं ताकानाम पवित्रहै ॥ ऐसेशुद्धिकरणेहारे गंगास्नान गायत्रीजप आदिक हैं ॥ सोपवित्ररूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और तिसजानणेयोग्यब्रह्मकेज्ञानका साधनरूपजो ओंकारहै ॥ सोओंकाररूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और अग्निहोत्रादिककर्मोंकीसिद्धिविषेउपयोगी तथातावेद्यब्रह्मविषे प्रमाणभूत जोऋग्वेदहै तथासामवेदहै तथायजुर्वेदहै ॥ सोऋगादिवेदरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ ईहां (यजुरेवच) यावचनविषेस्थितजो चकारहै ॥ ताचकार करिकै अथर्वणवेदकाभीग्रहणकरणा इति ॥ १७ ॥ ❀ ॥

(मू० श्लो०) गतिर्भर्त्ताप्रभुःसाक्षीनिवासःशरणंसुहृत् ॥ प्रभवःप्रलयःस्थानंनिधानंबीजमव्ययम् ॥ १८ ॥ गतिः। भर्त्ता। प्रभुः। साक्षी। निवासः। शरणं। सुहृत्। प्रभवः। प्रलयः। स्थानं। निधानं। बीजम्। अव्ययम् ॥ १८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरहीं गतिरूपहूं तथाभर्त्तारूपहूं तथाप्रभुरूपहूं तथासाक्षीरूपहूं तथानिवासरूपहूं तथाशरणरूपहूं तथासुहृत्रूपहूं तथाप्रभवरूपहूं तथाप्रलयरूपहूं तथास्थानरूपहूं तथानिधानरूपहूं तथानाशतैंरहित बीजरूपहूं ॥ १८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन कर्मोंकरिकै जोफलप्राप्तहोवैहै ताफलकानाम गतिहै ॥ ऐसे स्वर्गादिफलहैं ॥ सोगतिरूपभीमैंपरमेश्वरहींहूं और सुखकेसाधनोंकीप्राप्तिकरिकै जो पोषणकरेहै ताकानाम भर्त्ताहै ॥ सोभर्त्तारूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और यहपुत्रादिकपदार्थ हमारेहींहै याप्रकारतैं तिनपुत्रादिकपदार्थोंकूंस्वीकारकरणेहारा जोस्वामीहैताकानाम प्रभुहै ॥ सोप्रभुरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और सर्वप्राणियोंकेशुभअशुभकर्मोंकूं जोदेखणेहाराहै ताकानाम साक्षीहै ॥ जैसे सूर्यचंद्रमादि कहैं ॥ सोसाक्षीरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और निवासकरियेजिसविषे ताकानाम निवासहै ॥ अर्थात् भोगकेस्थानकानाम निवासहै ॥ सोनिवासरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और विनाशकूंप्राप्तहोवैंदुःखजिसकेसमीप ताकानाम शरणहै ॥ अर्थात् शरणागतकूंप्राप्तहुएजनोंकेदुःखकानाशकरणेहारेकानाम शरणहै ॥ सो शरणरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं॥ और प्रतिउपकारकीनहींअपेक्षाकरिकै जोउपकारकरेहै ताकानाम सुहृत्है॥ सोसुहृत्रूपभीमैंपरमेश्वरहींहूं॥ और उत्पत्तिकानाम प्रभवहै॥ और विनाशकानाम प्रलयहै ॥ औरस्थितिकानाम स्थानहै ॥ सो प्रभवप्रलय स्थानरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ अथवा जिसकरिकै यहकार्य उत्पन्नहोवैहैं ताकाना मप्रभवहै ॥ अर्थात् स्रष्टाकानामप्रभवहै ॥ और तेकार्य लयभावकूंप्राप्तहोवैं जिसकरिकै ताकानाम प्रलयहै ॥ अर्थात् संहर्त्ताकानाम प्रलयहै ॥ और यहकार्य स्थितहोवैंजिसविषे ताकानाम स्थानहै ॥ अर्थात् आधारकानाम स्थानहै ॥ सो प्रभव प्रलयस्थानरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और तिसकालविषेभोगकीअयोग्यता तैं कालांतरविषेभोगणेयोग्यवस्तु स्थितकरीयेजिसविषे ताकानाम निधानहै ॥ अर्थात् सूक्ष्मरूपसर्ववस्तुवोंकाअधिकरणजोप्रलयस्थानहै ताकानाम निधानहै ॥

अथवा शंखपद्मादिकनिधिकानाम निधानहै ॥ सोनिधानरूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और उत्पत्तिकाजोकारणहोवै ताकानाम बीजहै ॥ जोबीज अव्ययहै ॥ अर्थात् जैसे ब्रीहियवादिकंबीज विनाशकूंप्राप्तहोवैहैं तैसे जोबीजविनाशकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ ऐसा उत्पत्तिविनाशतेरहित सर्वकाकारणरूपबीजभी मैं परमेश्वरहींहूं इति ॥ १८ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) तपाम्यहमहंवर्षंनिगृह्णाम्युत्सृजामिच ॥ अमृतंचैवमृत्युश्चसदसच्चाहमर्जुन ॥ १९ ॥ तपामि । अहम् । अहं । वर्षं । निगृह्णामि । उत्सृजामि । च । अमृतं । च । एव । मृत्युः । च । सत् । असत् । च । अहम् । अर्जुन ॥ १९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरहीं तापकूंकरूंहूं तथा मैंपरमेश्वरहीं जलरूपरसकूं आकर्षणकरूंहूं तथा तारसकूं पुनःभूमिविषे परित्यागक रूंहूं तथा मैंपरमेश्वरहीं अमृतरूपहूं तथा मृत्युरूपहूं तथा सत्रूपहूं तथा असत्रूपहूं ॥ १९ ॥ इतिपदार्थः ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन सर्वकाआत्मारूप मैंअंतर्यामीपरमेश्वरहीं सूर्यरूपहोइके इसलोकविषे तापकूंकरूंहूं ॥ और तिसतापकेवशतें सोसूर्यरूपमैंपरमेश्वरहीं पूर्व कऱ्येहुएवृष्टिरूपरसकूं किसीकआपणीकिरणावोंकरिकै कार्त्तिकादिकअष्टमासोंविषे इसपृथिवीतैं आकर्षणकरूंहूं ॥ तिसतैंअनंतर सोसूर्यरूपमैंपरमेश्वरहीं तिसआ कर्षणकऱ्येहुएरसकूं आषाढादिकच्यारिमासोंविषे किसीकआपणीकिरणावोंकरिकै इसपृथिवीविषे वृष्टिरूपकरिकैपरित्यागकरूंहूं ॥ और देवतावोंकेभक्षणकरणे योग्यजोअन्नहै ॥ जिसअन्नकेभक्षणकरिकै तेदेवता मरणकूंप्राप्तहोतेनहीं ॥ ताअन्नकानाम अमृतहै ॥ अथवा सर्वप्राणीयोंकेजीवनकानाम अमृतहै सोअमृतरूप भी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और सर्वप्राणीयोंकूंजोनाशकरेहै ताकानाम मृत्युहै ॥ अथवा सर्वप्राणीयोंकाजोविनाशहै ताकानाम मृत्युहै ॥ सोमृत्युरूपभी मैंप रमेश्वरहींहूं ॥ और जोवस्तु जिसआधारकेसंबंधवालाहुआ विद्यमानहोवैहै सोवस्तु तिसआधारविषे सत्कह्याजावैहै ॥ और जोवस्तु जिसआधारकेसंबंधवाला हुआ नहींविद्यमानहोवैहै ॥ सोवस्तु तिसअधिकरणविषे असत्कह्याजावैहै ॥ जैसे रूप पृथिवीजलतेजरूपआधारकेसंबंधवालाहुआ विद्यमानहोवैहै ॥ यातैं सो रूप तापृथिवीजलतेजरूपआधारविषे सत्कह्याजावैहै ॥ और सोईहींरूप वायुआकाशरूपआधारकेसंबंधवालाहुआविद्यमानहोवैनहीं ॥ यातैंसोरूप तावायुआका शविषे असत्कह्याजावैहै ॥ ऐसेसतअसत्रूपता अन्यपदार्थोंविषेभी जानिलेणी ॥ सोसत्रूप तथाअसत्रूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ और किसीटीकाविषेतौं सत्असत् यादोनोंशब्दोंका यहअर्थकऱ्याहै ॥ शास्त्रविहितसाधुकर्मकानाम सत्है ॥ और शास्त्रनिषिद्धअसाधुकर्मकानाम असत्है इति ॥ और अन्यकिसीटीका विषेतौं सत् असत् यादोनोंशब्दोंका यहअर्थकऱ्याहै ॥ जोवस्तुइदमस्ति इदमस्ति इसप्रकारकेनामरूपकारिकै कथनकऱ्याजावैहै ॥ सोवस्तु व्यक्तकह्याजावैहै ॥

ऐसाव्यक्तरूप जोनामरूपात्मक कार्यमात्रहै ॥ सोव्यक्तनामाकार्य सत्कह्याजावैहै ॥ और ताकार्यरूपव्यक्ततैंविलक्षण तथानामरूपकाकारणरूप जोअव्यक्तहै ॥ सोअव्यक्त असत्कह्याजावैहै ॥ अथवा स्थूलरूपदृश्यकानाम सत्है ॥ और सूक्ष्मरूपअदृश्यकानाम असत्है ॥ सोसत्रूप तथा असत्रूपभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ ईहां (सदसच्च) इसवचनविषेस्थितजोचकारहै ॥ सोचकार ताव्यक्तअव्यक्तरूप सत्असत्दोनोंकेनिषेधकीयेहुए तानिषेधकाअवधिरूपकरिकैस्थित तथाकार्यकारणभावतैंरहित जोनिर्विशेष परब्रह्महै सोभीमैंहींहूं इसअर्थकेसूचनकरणेवासतैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ सर्वकाआत्मारूपमैंपरमेश्वरकूंजानिकैतेअधिकारीजन आपणेआपणेअधिकारकेअनुसार पूर्वउक्तबहुतप्रकारोंकरिकै मैंपरमेश्वरकूंहीं चिंतनकरेहैं इति ॥ १९ ॥ ❋ ॥ इसप्रकार अहंग्रहउपासनारूप एकभावकरिकै तथाप्रतीकउपासनारूप पृथक्भावकरिकै तथाअन्यबहुतप्रकारोंकरिकै मैंपरमेश्वरकूं निष्कामहोइकैचिंतनकरणेहारे जेपूर्वउक्त उत्तम मध्यम मंद यह तीनप्रकारकेअधिकारीजनहैं ॥ तेअधिकारीजनतौं अंतःकरणकीशुद्धिद्वारा तथाआत्मज्ञानकीउत्पत्तिद्वारा क्रमकरिकै मुक्तिकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ और जेपुरुष सकामहुए किसीभीप्रकारकरिकै मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरतेनहीं ॥ किंतु आपणीआपणीकामनाके विषयभूत जेस्वर्गादिकविषयसुखहैं ॥ तिनोंकीप्राप्तिवासतै काम्यकर्मोंकूंहीं करेहैं ॥ तेसकामपुरुष अंतःकरणकीशुद्धिकरणेहारे निष्कामकर्मोंकेअभावकरिकै आत्मज्ञानकेश्रवणादिकसाधनोंकेअयोग्यहुए वारंवार जन्ममरणरूपसंसारकूंहीं अनुभवकरेहैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् दोश्लोकोंकरिकैनिरूपणकरेहै ॥

(मू० श्लो०) त्रैविद्यामांसोमपाःपूतपापायज्ञैरिष्ट्वास्वर्गतिंप्रार्थयंते ॥ तेपुण्यमासाद्यसुरेंद्रलोकमश्नंतिदिव्यान्दिविदेवभोगान् ॥ २० ॥

त्रैविद्याः । माम् । सोमपाः । पूतपापाः । यज्ञैः । इष्ट्वा । स्वर्गतिं । प्रार्थयंते । ते । पुण्यम् । आसाद्य । सुरेंद्रलोकम् । अश्नंति । दिव्यान् । दिवि । देवभोगान् ॥ २० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जेऋगादिकतीनवेदोंकूंजानणेहारेपुरुष काम्ययज्ञोंकरिकै मैंपरमेश्वरकूं पूजनकरिकै सोमकूंपानकरतेहुए तथापापोंतैंरहितहुए स्वर्गकीप्राप्तिकूं चाहतेहैं तेसकामपुरुष पुंण्यकेफलरूप तिसस्वर्गलोककूं प्राप्तहोइकै तिसस्वर्गलोकविषे दिव्य देवतावोंकेभोगोंकूं भोगेहैं ॥ २० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यज्ञविषे होताकृतजोकर्महै तथाअध्वर्युकृतजोकर्महै तथाउद्गाताकृतजोकर्महै ताकर्मकेज्ञानकाहेतुभूतहैं ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद यहतीनविद्या जिनपुरुषोंकी तिनोंकानाम त्रैविद्यहै ॥ अथवा तिनऋगादिकतीनविद्यावोंकूं जेभलीप्रकारतेजानतेहोवैं तिनोंकानाम त्रैविद्यहै ॥ तहां तिनतीनवेदोंउक्तकर्मके करावणेविषे तथाआपकरणेविषे जोसामर्थ्यहै ॥ यहहीं तिनतीनवेदोंका भलीप्रकारजानणाहै ॥ ऐसे तीनवेदोंकूंजानणेहारे याज्ञिकपुरुष अग्निष्टोमादिककाम्य

यज्ञोंकरिकै इंद्र वसु रुद्र आदित्यरूप मैंपरमेश्वरकूंपूजनकरिकै ॥ अर्थात् यहपरमेश्वरहीं इंद्रादिरूपहै याप्रकारतैं इंद्रादिरूपकरिकै मैंपरमेश्वरकूंनहींजानते हुएभी तेसकामपुरुष वस्तुगतितैं तिनइंद्रादिक देवतावोंकेपूजनतैं मैंअंतर्यामीपरमेश्वरकूंनहीं पूजनकरिकै जेपुरुष सोमपाहोवैहै ॥ इहां सोमवल्लीकेरसकूंनिकासिकै तारसरूपसोमकूंहीं वैदिकअग्निविषेहवनकरिकै परिशेषतैंरह्येहुए सोमकूं जेपुरुष पानकरेहैं तिनोंकानाम सोमपाहै ॥ तिससोमकेपानकरिकैहीं पूतपापाहुए ॥ अर्थात् स्वर्गभोगोंकेप्रतिबंधकपापकर्मोंतैंरहितहुए जेसकामपुरुष केवल स्वर्गलोककेप्राप्तिकीहींइच्छाकरेहैं ॥ अंतःकरणकेशुद्धिकी तथाआत्मज्ञानकेप्राप्तिकी जे पुरुष इच्छाकरतेनहीं ॥ अर्थात् स्वर्गलोकविषे किंचित्मात्रभी भयहोतानहीं तथास्वर्गवासीदेवता अमृतभावकूं प्राप्तहोतेहैं याप्रकारकेअर्थवादवचनोंकूंश्रवणकरिकै जेसकामपुरुष सोस्वर्गलोक हमारेकूंप्राप्तहोवै याप्रकारतैं केवलस्वर्गसुखकेप्राप्तिकीहींइच्छाकरेहैं ॥ तेस्वर्गकीकामनावालेसकामपुरुष तिनअग्निष्टोमादिकपुण्यकर्मोंकेफलरूप देवराजइंद्रकेस्वर्गलोकरूपस्थानकूं प्राप्तहोइकै तिसस्वर्गलोकविषे दिव्यदेवभोगोंकूं भोगेहैं ॥ तहां जेभोग इनमनुष्योंकूं नहींप्राप्तहोवैहैं तिन भोगोंकूं दिव्यभोग कहेहैं ॥ और जेभोग केवल देवतादेहकरिकैहीं भोगेजावैहैं तिनभोगोंकानाम देवभोगहै ॥ अथवा स्वर्गविषे देवतावोंनैं प्राप्तकन्येजेभोगहैं तिनोंकानाम देवभोगहै ईहां भोगशब्दकरिकै विषयसुखकाग्रहणकरणा ॥ अथवा ताभोगशब्दकरिकै तासुखकेसाधनरूपविषयोंकाग्रहणकरणा ॥ तहां विषय सुखकानाम भोगहै इसपक्षविषेतौं (अश्नंति) इसपदका अनुभवंति यहअर्थकरणा ॥ और विषयोंकानाम भोगहै इसपक्षविषेतौं (अश्नंति) इसपदका भुंजते यहअर्थकरणा ॥ अर्थात् तेसकामपुरुष तास्वर्गलोकविषे विषयजन्यदिव्यसुखोंकूं अनुभवकरेहैं ॥ अथवा दिव्यविषयोंकूंभोगेहैं इति ॥ २० ॥ ❀ ॥

॥ शंका ॥ हेभगवन् तास्वर्गलोकविषे दिव्यभोगोंकेभोगणेतैं तिनसकामपुरुषोंकूं किसअनिष्टकीप्राप्तिहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् तिनसकामपुरुषोंकूं महान्अनिष्टकीप्राप्तिकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) तेतंभुक्त्वास्वर्गलोकंविशालंक्षीणेपुण्येमर्त्यलोकंविशंति ॥ एवंहित्रैधर्म्यमनुप्रपन्नागतागतंकामकामालभंते ॥ २१ ॥

ते । तम् । भुक्त्वा । स्वर्गलोकम् । विशालम् । क्षीणे । पुण्ये । मर्त्यलोकम् । विशंति । एवम् । हि । त्रैधर्म्यम् । अनुप्रपन्नाः ॥ गतागतम् । कामकामाः । लभंते ॥ २१ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तेसकामपुरुष तिस विशाल स्वर्गलोककूं भोगिकै तापुण्यके नाशहुए पुनः इसमनुष्यलोककूं प्राप्तहोवैहैं ॥ इसप्रकारतैं प्रसिद्ध वेदप्रतिपादितकाम्यकर्मकूं पुनःनिश्चयकरतेहुए तथा दिव्य भोगोंकीकामनाकरतेहुए तेसकामपुरुष वारंवार गमनआगमनकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ २१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन तेसकामपुरुष तिसकाम्यरूपपुण्यकर्मकरिकै प्राप्तहुए विस्तारवालेस्वर्गलोककूं भोगिकै अर्थात् आपणेआपणेपुण्यकर्मकीअधिकतातैं तिस स्वर्गलोककेअधिकसुखकूंअनुभवकरिकै तिसभोगकेजनक पुण्यकर्मोंकेनाशहुएतैंअनंतर तिसदेवतादेहकेनाशहुए पुनः देहकेग्रहणवासतै इसमनुष्यलोककूंप्राप्तहोवैहैं॥ अर्थात् पुनःगर्भवासतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकेदुःखोंकूंअनुभवकरेहैं ॥ और जैसेपूर्वमनुष्यदेहविषे तिनकर्मीपुरुषोंनैं त्रैधर्म्यकूं निश्चयकऱ्याथा ॥ तैसे इसमनुष्य देहविषेभी तिस त्रैधर्म्यकूंहीं निश्चयकरेहैं ॥ अर्थात् तिस त्रैधर्म्यकेअनुष्ठानविषेहीं तत्परहोवैहैं ॥ तहां ऋग् यजुष् साम यातीनवेदोंकरिकैप्रतिपादित जो होताका तथाअध्वर्युका तथाउद्गाताका धर्मविशेषहै ॥ तिनतीनधर्मोंकेयोग्यजे ज्योतिष्टोमादिककाम्यकर्महैं ॥ तिनकाम्यकर्मोंकानाम त्रैधर्म्यहै ॥ और (एवंत्रयीधर्ममनु प्रपन्नाः) इसप्रकारकाजो मूलश्लोकविषेपाठहोवै ॥ तौंभी इसपूर्वउक्तअर्थतैं विलक्षणअर्थ सिद्धहोवैनहीं ॥ किंतु सोपूर्वउक्तअर्थहींसिद्धहोवैहै ॥ तहां ऋग्वेद यजु र्वेद सामवेद यातीनवेदोंकानाम त्रयीहै ॥ तिस तीनवेदरूपत्रयीकरिकैप्रतिपादितजो ज्योतिष्टोमादिककाम्यधर्महै ताकानाम त्रयीधर्महै ॥ तहां होता अध्वर्यु उद्गा तायहतीनोंनाम यज्ञकरावणेहारेब्राह्मणोंकेहोवैहैं ॥ और अग्निष्टोम ज्योतिष्टोम यहयज्ञविशेषहोवैहै ॥ और (अनुप्रपन्नाः) इसवचनकेआदिविषेस्थितजो अनु यहशब्दहै ॥ सोअनुशब्द उत्तरउत्तरजन्मके कर्मविषयकनिश्चयविषे पूर्वपूर्वजन्मके कर्मविषयकनिश्चयकीअपेक्षाकूं सूचनकरेहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ (त्रिकर्मकृत्तरतिजन्ममृत्यू दक्षिणावंतोअमृतत्वंभजंते ॥) अर्थयह ॥ तीनवेदप्रतिपादितकर्मोंकूंकरणेहारेपुरुष जन्ममृत्युतैंरहितहोवैहैं ॥ और दक्षिणावालेपुरुष अमृतभावकूं प्राप्तहोवैहैं इति ॥ इत्यादिक स्तुति रूपअर्थवादोंकेकथनपूर्वक ऋगादिकवेदोंनैं प्रतिपादनकऱ्ये जेज्योतिष्टोमादिककाम्यकर्महैं ॥ तेकाम्यकर्महीं भोगमोक्षकीप्राप्तिविषे परमकारणहैं मनका निग्रहरूपशम तथाइंद्रियोंकानिग्रहरूपदम तथासर्वकर्मोंकासंन्यास तथा आत्मज्ञान तथाईश्वर इनसर्वोंविषे कोई भी साधन तिसभोगमोक्षका कारणहै नहीं ॥ इसप्रकारके पूर्वपूर्वजन्मकेनिश्चयकूंलैके उत्तरउत्तरजन्मविषेभी तेसकामपुरुष तिसीप्रकारकेनिश्चयकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ इसीकारणतैंहीं तेसकामपुरुष पुनःभी तिनदिव्यभोगोंकीइच्छाकरतेहुए गतागतकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ तहां पुण्यकर्मकरिकै इसमनुष्यलोकतैं स्वर्गलोककूं जाणा ताकानाम गतहै ॥ और तापुण्यकर्मकेक्षयहुए तास्वर्गलोकतैं पुनःइसमनुष्यलोकविषेआवणा ताकानाम आगतहै ॥ अर्थात् तेसकामपुरुषकाम्यकर्मोंकूंक रिकै स्वर्गकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तिनपुण्यकर्मोंकेक्षयहुएतैंअनंतर तास्वर्गलोकतैं मनुष्यलोकविषेआइकै ते सकामपुरुष पूर्वसंस्कारोंकेवशतैं पुनःकर्मोंकूंकरेहै ॥ तिनकर्मों केभोगवासतै पुनः स्वर्गकूंजावैहैं ॥ तहांतैं पुनःमनुष्यलोककूं प्राप्तहोवैहैं ॥ इसप्रकार तिनसकामपुरुषोंकूं गर्भवासतैंआदिलैकेअनेकप्रकारकेदुःखोंकाप्रवाह निरंतर बन्यारहेहै ॥ यहहीं तिनसकामपुरुषोंकूं महान्अनिष्टकीप्राप्तिहै इति ॥ साअनिष्टकीप्राप्तीमुंडकउपनिषदकीश्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (प्लवाह्येते

अदृढायज्ञरूपाअष्टादशोक्तमवरंयेषुकर्म ॥ एतच्छ्रेयोयेऽभिनंदंतिमूढाजरामृत्युंतेपुनरेवापियंति ॥) अर्थयह ॥ षोडशऋत्विज यजमान ताकीस्त्री यहअष्टादश धीवरहै चलावनेहारेजिनोंके ऐसेजो काम्यकर्मरूप अदृढप्लववहैं ॥ तेकाम्यकर्मरूपप्लव इसपुरुषकूं महान्‌संसारसमुद्रतैं पारकरतेनहीं ॥ ऐसेकाम्यकर्मोंकूं आपणेश्रेयकासाधनमानिकै जेमूढपुरुष हर्षकूंप्राप्तहोवैहै तेसकामपुरुष पुनःपुनःजरामरणकूं प्राप्तहोवैहै इति ॥ इसश्रुतिकाअर्थ आत्मपुराणेकषोडशेअध्याय विषे हम विस्तारतैंनिरूपण करिआयेहैं ॥ यातैं ईहांसंक्षेपतैंनिरूपणकऱ्याहै और यद्यपि बहुतमूलपुस्तकोंविषे (एवंत्रयीधर्ममनुप्रपन्नाः) याप्रकारकाहीं पाठहोवैहै ॥ तथा श्रीशंकरानंदस्वामीनैं श्रीनीलकंठपंडितनैंभी इसीप्रकारकेपाठकूंअंगीकारकरिकै व्याख्यानकऱ्याहै ॥ तथापि गीताभाष्यकाव्याख्यानकरणेहारे श्रीस्वामीआनंदगिरिनैं तथाश्रीस्वामीमधुसूदननैं (एवंहित्रैधर्म्यमनुप्रपन्नाः) याप्रकारकेपाठकूं अंगीकारकरिकैहीं व्याख्यानकऱ्याहै ॥ याकारणतैं इसग्रंथविषेभी (एवंहि त्रैधर्म्यमनुप्रपन्नाः) यहहींपाठराख्याहै इति ॥ २१ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्व दोश्लोकोंकरिकै सम्यक्‌ज्ञानतैंरहित सकामपुरुषोंकीगति कथनकरी ॥ अब सम्यक्‌ज्ञानवालेनिष्कामपुरुषोंकेगतिकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) अनन्याश्चिंतयंतोमांयेजनाःपर्युपासते ॥ तेषांनित्याभियुक्तानांयोगक्षेमंवहाम्यहम् ॥ २२ ॥ अनन्याः । चिंतयंतः । माम् । ये । जनाः । पर्युपासते । तेषाम् । नित्याभियुक्तानाम् । योगक्षेमम् । वहामि । अहम् ॥२२॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जे अधिकारीजन अनन्यहोइकै चिंतनकरतेहुए मैंपरब्रह्मकूं साक्षात्कारकरेहैं तिन नित्ययुक्तपुरुषोंके योगक्षेमकूं मैंपरमेश्वरहीं प्राप्तकरूंहूं ॥ २२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अन्य कहिये भेददृष्टिकाविषय नहींविद्यमानहैजिनोंकूं तिनोंकानाम अनन्यहै ॥ अर्थात् जेपुरुष सर्वत्र अद्वितीयब्रह्मकूंहींदेखेहैं तथासर्व विषयभोगोंकीइच्छातैंरहितहैं ॥ तथा मैंहीं भगवान्‌वासुदेवसर्वात्मारूपहूं हमारेतैंभिन्न किंचित्‌मात्रभीवस्तुनहींहै याप्रकारकानिश्चयकरिकै तिसीप्रत्यक्‌आत्माकूं सर्वदाचिंतनकरतेहुए जेसाधनचतुष्टयसंपन्न विरक्तसंन्यासी मैंपरब्रह्मकूं आपणाआत्मारूपकरिकैसाक्षात्कारकरेहैं ॥ तेतत्त्ववेत्तापुरुष मैंपरिपूर्णब्रह्मकेअभेदभाव करिकै कृतकृत्यहींहोवैहैं ॥ ऐसेतत्त्ववेत्तापुरुषोंकूं पुनःसंसारकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् अद्वैतदर्शनविषेहैनिष्ठाजिनोंकी तथाअत्यंतनिष्कामताकरिकै युक्त तथाआपणीइच्छापूर्वक नहींप्रयत्नकरतेहुए ऐसेजेतत्त्ववेत्तापुरुषहैं ॥ तिनतत्त्ववेत्तापुरुषोंका इसशरीरकेरक्षणवासते योगक्षेम किसप्रकार सिद्धहोवैगा ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान्‌कहेहैं (तेषांनित्याभियुक्तानामिति) तहां निरंतर आदरपूर्वक परमेश्वरकेध्यानविषे जेतत्परहोवैं तिनोंकानाम नित्याभियुक्तहै ॥

जेध्याननिष्ठपुरुष आपणेदेहकीयात्रामात्रवासतैंभी प्रयत्नकरतेनहीं ॥ ऐसेतत्त्ववेत्तापुरुषोंके योगकूं तथाक्षेमकूं मैंपरमेश्वरहीं प्राप्तकरूंहूं ॥ तहां पूर्वअप्राप्त अन्न वस्त्रादिक पदार्थोंकीजाप्राप्तिहै ताकानाम योगहै ॥ और प्राप्तहुए तिनपदार्थोंकाजोपरिरक्षणहै ताकानाम क्षेमहै ॥ यद्यपि तेतत्त्ववेत्तापुरुष आपणेशरीरकी स्थितिवासतै तायोगक्षेमकीइच्छाकरतेनहीं ॥ तथापि मैंअंतर्यामीईश्वर आपहीं तिनोंकेयोगक्षेमकूंसिद्धकरूंहूं ॥ जैसे आपणीइच्छातैंरहितबालकके योगक्षेमकूं ताकेमातापिताहीं सिद्धकरेहैं ॥ तैसे मैंपरमेश्वरहीं तिसतत्त्ववेत्तापुरुषके योगक्षेमकूं सिद्धकरूंहूं ॥ जिसकारणतैं (प्रियोहिज्ञानिनोऽत्यर्थमहंसचमम प्रियः ॥ उदाराःसर्वएवैतेज्ञानीत्वात्मैवमेमतम्) इत्यादिकवचनोंकरिकै मैंपरमेश्वर तिनज्ञानवान्पुरुषोंकूं आपणाआत्मारूपकरिकैकथनकरताभयाहूं ॥ तथाआपणा आत्मारूपहोणेतैंहीं सोज्ञानवान्पुरुषतौं मैंपरमेश्वरकूं अत्यंतप्रियहै ॥ और मैंपरमेश्वर तिसज्ञानवान्पुरुषकूं अत्यंतप्रियहूं ॥ ऐसे आत्मारूप तथाअत्यंतप्रिय ज्ञानवान्पुरुषोंके योगक्षेमकूंसिद्धकरणा मैंपरमेश्वरकूं उचितहींहै ॥ यद्यपि सर्वप्राणीयोंकेयोगक्षेमकूं मैंपरमेश्वरहीं प्राप्तकरेहै ॥ केवल ज्ञानवान्पुरुषोंकेहीं योगक्षेमकूं प्राप्तकरतानहीं ॥ तथापि अन्यप्राणीयोंकेयोगक्षेमकूं जो परमेश्वरप्राप्तकरेहैं ॥ सो तिनप्राणीयोंकेप्रयत्नकूं प्रथमउत्पन्नकरिकै तिसप्रयत्नद्वाराहीं तिनप्राणीयोंकूं तायोगक्षेमकीप्राप्तिकरेहै ॥ ताप्रयत्नतैंविना प्राप्तिकरैनहीं और ज्ञानवान्पुरुषोंकूंतौ तायोगक्षेमकी प्राप्तिवासतै प्रयत्नकूंनहींउत्पन्नकरिकैहीं तायोग क्षेमकीप्राप्तिकरेहै ॥ इतनीदोनोंविषेविशेषताहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौ तायोगक्षेमका यहअर्थकऱ्याहै ॥ पूर्वअप्राप्तयोगभूमिकाकीजाप्राप्तिहै ताकानाम योगहै ॥ और पूर्वप्राप्तयोगभूमिकाका जोरक्षणहै ताकानाम क्षेमहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (योगस्यक्षेमंयोगक्षेमं) याप्रकारकासमासकरिकै तायोगक्षेम का यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ निरंतरब्रह्मनिष्ठाकानाम योगहै ॥ तिसब्रह्मनिष्ठारूपयोगकाजोक्षेमहै अर्थात् अध्यात्मिकआदिकउपद्रवोंकरिकै जोविच्छेदतैंरहित पणाहै ताकानामयोगक्षेमहै ॥ ऐसेयोगक्षेमकूं मैंपरमेश्वरहीं सर्वदा सिद्धकरूंहूं इति ॥ २२ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् आपपरमेश्वरतैंभिन्न दूसराकोईवस्तु हैनहीं ॥ किंतु सर्वपदार्थ तुमाराहींस्वरूपहैं ॥ यातैं तेइंद्रादिकअन्यदेवताभी तुमाराहींस्वरूपहैं ॥ तुमारेतैं तेइंद्रादिकदेवता जुदानहींहैं ॥ यातैं जैसे साक्षात् तुमारेभक्त तैंपरमेश्वरकूंहीं भजेहैं ॥ तैसेइंद्रादिकअन्यदेवतावोंकेभक्तभी वस्तुगतितैं तैंपरमश्वरकूंहीं भजेहैं ॥ इसरीतिसैं तुमारेभक्तोंविषे तथाअन्यदेवतावोंकेभक्तों विषे किंचित्मात्रभी विशेषता सिद्धहोतीनहीं ॥ यातैं इंद्रादिकअन्यदेवतावोंकेभक्ततौं पुनः पुनः गमनआगमनकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ और मैंपरमेश्वरकूं अनन्यहोइकै चिंतनकरणेहारेज्ञानवान् भक्तौं कृतकृत्यहोवैहैं ॥ यहपूर्वउक्तआपकावचन कैसेसंगतहोवैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥

(मू०श्लो०)येप्यन्यदेवताभक्तायजंतेश्रद्धयान्विताः॥ तेपिमामेवकौंतेययजंत्यविधिपूर्वकम्॥ २३ ॥ ये। अपि। अन्येदेवता

भक्ताः । यजंते । श्रद्धया । अन्विताः । ते । अपि । माम् । एव । कौंतेय । यजंति । अविधिपूर्वकम् ॥२३॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेकौं
तेय जे अन्यदेवतावोंकेभक्त भी श्रद्धाकरिकै युक्तहुए पूजनकरेहैं तेभक्त भी अज्ञानपूर्वक मैंपरमेश्वरकूं हीं पूजनकरेहैं ॥
॥ २३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जैसे मैंपरमेश्वरकेभक्त मैंपरमेश्वरकूंहीं पूजनकरेहैं ॥ तैसे जेइंद्रादिकअन्यदेवतावोंकेभक्तभी आस्तिक्यबुद्धिरूपश्रद्धाकरिकैयुक्तहुए ज्योतिष्टोमादिकयज्ञोंकरिकै तिनइंद्रादिकदेवतावोंकूं पूजनकरेहैं ॥ तेअन्यदेवतावोंकेभक्तभी वस्तुगतितैं तिसतिसदेवतारूपकरिकैस्थितहुएमैंपरमेश्वरकूंहीं पूजनकरेहैं ॥ परंतु तेअन्यदेवतावोंकेभक्त मैंपरमेश्वरकूं अविधिपूर्वकहीं पूजनकरेहैं ॥ ईहां अविधिनाम अज्ञानकाहै ताअज्ञानपूर्वकहीं मैंपरमेश्वरकूं पूजनकरेहैं ॥ अर्थात् यह परमेश्वरहीं सर्वकाआत्मारूपहै याप्रकारतैं सर्वकाआत्मारूपकरिकै मैंपरमेश्वरकूंनजानिकै तथातिनइंद्रादिकदेवतावोंकूं मैंपरमेश्वरतैंभिन्नकल्पनाकरिकै तेअन्यदेवतावोंकेभक्त मैंपरमेश्वरकूंपूजनकरेहैं ॥याकारणतैंहीं तेइंद्राइिकदेवतावोंकेभक्त पुनःपुनः जन्ममरणरूपसंसारकूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (अविधिपूर्वकम्) इसवचनकायह अर्थकर्‍याहै ॥ अभेदबुद्धिकानाम विधिहै ॥ ताअभेदबुद्धिरूपविधितैं तेपुरुष रहितहैं ॥ यातैं तेअन्यदेवताओंकेभक्त वस्तुगतितैं मैंसर्वात्मारूपपरमेश्वरकूं पूजनकरतेहुएभी सोतिनोंकापूजन अविद्यापूर्वकहींहै ॥ अभेदबुद्धिपूर्वक कर्‍याहुआ मैंपरमेश्वरकापूजनहीं विधिपूर्वकपूजनहोवैहै इति ॥ २३ ॥ ❀ ॥

अब श्रीभगवान् तिनसकामपुरुषोंकेभजनविषे अविधिपूर्वकपणा स्पष्टकरताहुआ तिनसकामपुरुषोंकी तिसस्वर्गादिकफलतैंभीप्रच्युतिकूं कथनकरेहै ॥

(मू०श्लो०) अहंहिसर्वयज्ञानांभोक्ताचप्रभुरेवच ॥ नतुमामभिजानंतितत्त्वेनातश्च्यवंतिते ॥२४॥ अहं । हिं । सर्वयज्ञानाम् । भोक्ता ।
च । प्रभुः । एव । च । न । तु । माम् । अभिजानंति । तत्त्वेन । अतः । च्यवंति । ते ॥२४॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वर
हीं सर्वयज्ञोंका भोक्ताहूं तथा फलप्रदाताहूं यहवार्त्ता प्रसिद्धहै परंतु तेसकामपुरुष मैंपरमेश्वरकूं तिसरूपकरिकै नहीं जानतेहैं
इसकारणतैंहीं तेसकामपुरुष पुनरावृत्तिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ २४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अधिकारिजनोंकेप्रति शास्त्रनैंविधानकरचे जितनैंकीश्रौतयज्ञहैं तथास्मार्त्तयज्ञहैं ॥ तिनसर्वयज्ञोंका मैंपरमेश्वरहीं तिसतिसइंद्रादिकदेवतारूपकरिकै भोक्ताहूं ॥ तथा मैंपरमेश्वरहीं आपणेअंतर्यामीरूपकरिकै अधियज्ञरूपहोणेतैं तिनयज्ञोंकेफलकाप्रदाताहूं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिस्मृतियोंविषे प्रसिद्धहींहै ॥ ऐसेमैंपरमेश्वरकूं तेअन्यदेवतावोंकेसकामभक्त तिसतत्त्वरूपकरिकैजानतेनहीं ॥ अर्थात् यहभगवान्वासुदेवहीं इंद्रादिकदेवतारूपकरिकै तौं तिनसर्वयज्ञोंका भोक्ता

रूपहै और आपणेअंतर्यामीस्वरूपकरिकैतौं तिनयज्ञोंकेफलकाप्रदाताहै ऐसेसर्वात्मारूप परमेश्वरतैंभिन्न दूसराकोई आराधनकरणेयोग्यनहींहै ॥ इसप्रकारकेस्वरूपकरिकै तेसकामपुरुष मैंपरमेश्वरकूंजानतेनहीं ॥ इसप्रकारतैंहीं तेअन्यदेवतावोंकेसकामभक्त तिसतिसफलतैं प्रच्युतिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरके तिसवास्तवस्वरूपकूंनहींजानतेहुए तेसकामपुरुष महान्आयासकरिकै तिनइंद्रादिकदेवतावोंकापूजनकरतेहुएभी मैंपरमेश्वरविषे तिनकर्मोंकानहींअर्पणकरतेहुए तिन काम्यकर्मोंकेप्रभावतैं पूर्वउक्तधूमादिकमार्गकरिकै तिसतिसदेवताकेलोकोंकूंप्राप्तहोइकै तिसलोकके भोगके अंतविषे तहांतैं प्रच्युतहोवैहैं॥ तात्पर्ययह॥ तिसतिसलोकके भोगोंकेजनक जेपुण्यकर्महैं ॥ तिनकर्मोंका भोगकरिकैनाशहुएतैंअनंतर तेसकामकर्मीपुरुष तिसतिसदेवतादेहादिकोंतैंवियोगवालेहुए पुनः देहकेग्रहणकरणेवासतै इसमनुष्यलोककूं प्राप्तहोवैहैं ॥ और जेअधिकारीजन तिनइंद्रादिकसर्वदेवतावोंविषे सर्वअंतर्यामीरूपभगवान्कूहींदेखतेहुए तिनयज्ञादिककर्मोंकूंकरेहैं ॥ तथा तिनसर्वकर्मोंकूं अंतर्यामीपरमेश्वरविषेहीं अर्पणकरेहैं ॥ तेनिष्कामपुरुष तिसउपासनासहितकर्मके प्रभावतैं पूर्वउक्तअर्चिरादिकमार्गद्वारा ब्रह्मलोककूं प्राप्तहोइकै तहां आत्मज्ञानकूंप्राप्तहोइकै ताब्रह्मलोकके भोगोंकेअंतविषे ॥ कैवल्यमोक्षकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ इसप्रकारतैं तिनसकामपुरुषोंकेफलविषे तथानिष्कामपुरुषोंकेफलविषे महान्भेदहै इति ॥ २४ ॥ ❀ ॥ तहां तिनइंद्रादिकअन्यदेवतावोंकेपूजनकरणेहारेपुरुषोंकूं अनावृत्तिरूपफलकेअभावहुएभी तिसतिसदेवताकेपूजनकेअनुसार तिसतिसक्षुद्रफलकीप्राप्ति अवश्यकरिकैहोवैहै ॥ इसअर्थकूंकथनकरताहुआ श्रीभगवान् साक्षात् परमेश्वरकेपूजनकरणेहारेभक्तजनोंकी तिनअन्यदेवतावोंके भक्तोंतैं विलक्षणताकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यांतिदेवव्रतादेवान्पितॄन्यांतिपितृव्रताः ॥ भूतानियांतिभूतेज्यायांतिमद्याजिनोपिमाम् ॥ २५ ॥ यांति । देवव्रताः । देवान् । पितॄन् । यांति । पितृव्रताः । भूतानि । यांति । भूतेज्याः । यांति । मद्याजिनः । अपि माम् ॥ २६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन देवतावोंकेपूजक तिनदेवतावोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं तथापितरोंकेपूजक तिनपितरोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं तथाभूतोंकेपूजक तिनभूतोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं तथामैंपरमेश्वरकेपूजक मैंपरमेश्वरकूं हीं प्राप्तहोवैहैं ॥ २६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अंतःकरणरूपउपाधिके सत्त्व रज तम इनतीनगुणोंकेभेदकरिकै तेअविधिपूर्वक भजनकरणेहारे पुरुषभी सात्त्विक राजस तामस इसभेदकरिकै तीनप्रकारकेहोवैहैं ॥ तहां इंद्रादिकदेवतावोंका बलिप्रदान प्रदक्षिणा नमस्कार इत्यादिकपूजनरूपहैव्रत जिनोंकूं तिनपुरुषोंकानाम देवव्रतहै ॥ ऐसे देवतावोंकूंपूजनकरणेहारेपुरुष तिनइंद्रादिकदेवतावोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ तेदेवतावोंकापूजनकरणेहारेपुरुष सात्विक कहेजावैहै ॥ और श्राद्धादिककर्मोंकरिकै

अग्निष्वात्तादिकपितरोंका आराधनकरणेहारेजेपुरुषहैं तिनोंकानाम पितृव्रतहै ॥ ऐसे पितरोंकाआराधनकरणेहारेपुरुष तिनपितरोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ तेपितरों काआराधनकरणेहारेपुरुष राजस कहेजावैहैं ॥ और यक्ष रक्षस् विनायक मातृगण इत्यादिकभूतोंका पूजनकरणेहारे जेपुरुषहैं तिनोंकानाम भूतेज्यहै ॥ ऐसे भूतोंकापूजनकरणेहारेपुरुष तिनभूतोंकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ तेभूतोंकूंपूजनकरणेहारेपुरुष तामस कहेजावैहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै परमेश्वरतैंअन्यदूसरेदेवतावोंकेआराधनका तिसतिसदेवतारूपकीप्राप्तिरूप नाशवान्फल कथनकऱ्या ॥ अब परमेश्वरकेआराधनका परमेश्वररूपताकीप्राप्तिरूप अविनाशीफलकूं कथनकरेहैं ॥ (यांतिमद्याजिनोपिमाम्) हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकेहीपूजनकरणेकाहैस्वभावजिनोंका तिनोंकानाम मद्याजीहै ॥ अर्थात् जेपुरुष इंद्रादिकसर्वदेवतावोंविषे मैंपरमेश्वरकूंहीं व्यापकदेखतेहुए निरंतर मैंपरमेश्वरकेहीं आराधनपरायणहोवैहै ॥ तेहमारेभक्ततौ मैंपरमेश्वरकूंहीं अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोवैहैं इति ॥ जो जिसका आराधनकरेहै सो तिसभावकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ यह वार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरेहै ॥ तहांश्रुति ॥ (तंयथायथोपासतेतदेवभवति) ॥ अर्थयह ॥ जोपुरुष जिसजिस देवताकीउपासनाकरेहै मरणतैंअनंतर सोपुरुष तिसतिसदेवताभावकूंहीं प्राप्तहोवैहै इति ॥ इसश्लोकविषे श्रीभगवान्कायहअभिप्रायहै ॥ परमेश्वरकेआराधनकरणेविषे तथाइंद्रादिकअन्यदेवतावोंकेआराधनकरणेविषे आयासकेसमानहुएभी यहजीव अविनाशीफलकी प्राप्तिकरणेहारेअंतर्यामीपरमेश्वरकूं नहींआराधनकरिकै अन्यइंद्रादिकदेवतावोंकाआराधनकरिकै नाशवान्फलकूंहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ यातैं इनअज्ञानीजीवोंके दुष्टअदृष्टकाप्रभाव कोईआश्चर्यरूपहै ॥ जिसदुष्टअदृष्टकेप्रभावतैं यहअज्ञानीजीव मुक्तिकरणेहारे परमेश्वरकेआराधनकापरित्यागकरिकै तुच्छफलकीप्राप्तिवासतै तिनइंद्रादिकदेवतावोंकाहीं आराधनकरेहैं इति ॥ २५ ॥ ❀ ॥ यातैं परमेश्वरतैंअन्यदेवतावोंका परित्यागकरिकै इसअधिकारीजननैं केवल परमेश्वरकाहीं आराधनकरणा ॥ जिसकारणतैं सोपरमेश्वरकाआराधन इसअधिकारीपुरुषकूं मोक्षरूपअविनाशीफलकीहीं प्राप्तिकरेहै ॥ तथा अन्यदेवतावोंकेआराधनकरणेविषे इसपुरुषकूं द्रव्यकेखरचतैंआदिलेके जितनाकीआयासहोवैहै ॥ तितनाआयास परमेश्वरकेआराधनकरणेविषेहोतानहीं ॥ किंतु सोपरमेश्वरकाआराधन अत्यंत सुगमहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) पत्रंपुष्पंफलंतोयंयोमेभक्त्याप्रयच्छति ॥ तदहंभक्त्युपहृतमश्नामिप्रयतात्मनः ॥ २६ ॥ पत्रम् । पुष्पम् । फलम् । तोयं । यः । मे । भक्त्या । प्रयच्छति । तत् । अहं । भक्त्युपहृतम् । अश्नामि । प्रयतात्मनः ॥२६॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन

जोकोईपुरुष मैंपरमेश्वरकेतांई भक्तिंकरिकै पत्र वापुष्प वाफल वाजल देताहै तिंसशुद्धबुद्धिवाले पुरुषके तिंस भक्तिपूर्वकअर्पण कऱ्येहुए पत्रपुष्पादिककूं मैंपरमेश्वर अंगीकारकरूंहूं ॥ २६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पत्र पुष्प फल जल इसतैंआदिलेकें जेकेईवस्तु विनाहींप्रयत्नतैंप्राप्तहोवेहैं ॥ तिनअत्यंतसुलभवस्तुवोंविषे जिसीकिसीपत्रपुष्पादिकवस्तुकूं जोकोईमनुष्य अनंतमहान्विभूतिवालेमैंपरमेश्वरकेतांई भक्तिकरिकै देवैहै ॥ अर्थात् परमेश्वरतैंपरेदूसराकोईहैंनहीं इसप्रकारकीबुद्धिपूर्वक जा निरतिशयप्रीतिहै ताप्रीतिकरिकै जोपुरुष भृत्यकीन्यांई मैंपरमेश्वरकेताई तिसवस्तुकाअर्पणकरेहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे महाराजाकेराज्यविषेस्थित जितनेंकीपदार्थहैं ॥ तेसर्वपदार्थ वस्तुगतितैं तामहाराजाकेहींहैं ॥ तिनमहाराजाकेपदार्थोंकूंही भृत्यलोक प्रीतिपूर्वकतिसमहाराजाकेताई अर्पणकरेहैं॥ ताकरिकै सोमहाराजा परितोषकूं प्राप्तहोवैहै॥ तैसे इसजगत्विषे जितनेकी पदार्थहै ॥ तेसर्व पदार्थ मैंपरमेश्वरकेहींहैं ॥ ऐसाकोईपदार्थ इसजगत् विषेहैनहीं ॥ जोपदार्थ मैंपरमेश्वरका नहींहोवै ॥ ऐसे मैंपरमेश्वरकेपदार्थोंकूंहीं जेपुरुष प्रीतिपूर्वक मैंपरमेश्वरकेतांई अर्पणकरेहैं ॥ तिन प्रीतिपूर्वकअर्पणकऱ्ये हुए शुद्धबुद्धिवालेपुरुषोंके पत्रपुष्पादिक अत्यंततुच्छपदार्थोंकूंभी मैंपरमेश्वर भोजनकरूंहूं ॥ अर्थात् जैसेकोई पुरुष अन्नकूं भोजनकरिकै तृप्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तैसे मैंपरमेश्वरभी तिनपत्रपुष्पादिकपदार्थोंकूं प्रीतिपूर्वकस्वीकारमात्रकरिकै तृप्तिकूंप्राप्तहोवूंहूं ॥ यद्यपि (अश्नामि) इसपदका मुख्यअर्थ भोजनकर्तृत्वहींहै ॥ तथापि तामुख्यअर्थकापरित्यागकरिकै तापदकीलक्षणावृत्तितैं जो प्रीतिपूर्वकस्वीकर्तृत्वरूपअर्थ अंगीकारकऱ्याहै ॥ सो प्रीतिकेअतिशयताकीहेतुताकेबोधनकरणेवासतै अंगीकारकऱ्याहै ॥ अर्थात् तिन भक्तिपूर्वकअर्पणकऱ्येहुए पत्रपुष्पादिकपदार्थोंके स्वीकारमात्रतैंहीं मैंपरमेश्वर अत्यंतप्रसन्नहोवूंहूं ॥ और श्रुतिविषेभी देवतावोंविषे मनुष्योंकीन्यांई भोजनकर्तृत्वकानिषेधहींकऱ्याहै ॥ याकारणतैंभी (अश्नामि) इसपदकी स्वीकाररूपअर्थविषे लक्षणाकरणी उचितहै ॥ तहांश्रुति ॥ (नहवैदेवाअश्नंतिनपिबंति एतदेवामृतंदृष्ट्वातृप्यंति) ॥ अर्थयह ॥ जैसे यहमनुष्य अन्नादिकपदार्थोंकूंभोजनकरेहैं तथाजलादिकोंकूंपानकरेहैं ॥ तैसे देवता तिनअन्नादिकोंकूंभोजनकरते नहीं ॥ तथा जलादिकोंकूंभी पानकरतेनहीं ॥ किंतु तेदेवता केवल अमृतकेदर्शनमात्रकरिकैहीं तृप्तिकूंप्राप्तहोवैहैं इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् आप साक्षात् परमेश्वरहोइकै ऐसेपत्रपुष्पादिकतुच्छवस्तुवोंकूं किसवासतै स्वीकारकरतेहो ॥ महान्पुरुषोंकूंतौं महान्वस्तुकाहीं स्वीकारकरणाउचितहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंका केहुए ॥ तिनतुच्छवस्तुवोंकेस्वीकारकरणेविषे हेतुकूंकथनकरेहैं (भक्त्युपहृतमिति) तेपत्रपुष्पादिकवस्तु यद्यपि तुच्छहैं ॥ तथापि तिनभक्तजनोंनैं तेपत्रपुष्पादिक अत्यंतप्रीतिरूपभक्तिकरिकै मैंपरमेश्वरकेतांई अर्पणकरेहैं ॥ याकारणतैं मैंपरमेश्वर तिनपत्रपुष्पादिकतुच्छपदार्थोंकूंभी महान्पदार्थरूपकरिकै स्वीकारकरूंहूं ॥

अर्थात् तिसतिसवस्तुकेस्वीकारकरणेविषे कोई तिसतिसवस्तुकीसौंदर्यता वामहानता निमित्तनहींहै॥ किंतु अत्यंतप्रीतिपूर्वक समर्पणहीं तावस्तुकेस्वीकारकरणेविषे निमित्तहै इति (ईहां भक्त्याप्रयच्छति) इसवचनविषे भक्तिकाकथनकरिकै (भक्त्युपहृतम्) इसवचनविषे जो पुनःभगवान्नैं भक्तिका कथनकऱ्याहै ॥ सो इसअर्थकेसूचनकरणेवासतै कथनकऱ्याहै ॥ जोपुरुषब्राह्मणहै तथाबहुततपस्वीहै परंतु मैंपरमेश्वरकीभक्तितैंरहितहै ॥ तिसभक्तिहीन तपस्वीब्राह्मणनै कोईमहान् वस्तुदेईहुईभी मैंपरमेश्वर तिसवस्तुकूं स्वीकारकरतानहीं ॥ यातैं मैंपरमेश्वरकृत वस्तुकेस्वीकारकरणेविषे कोईब्राह्मणत्वादिक उत्तमजाति तथातपस्वीपणा निमित्तनहींहै ॥ किंतुदेणेहारेपुरुषकी केवल परमप्रीतिहीं तास्वीकारकरणेविषे निमित्तहै इति ॥ अथवा जैसे अत्यंतप्रीतिपूर्वक मातानैंदीयेहुएपदार्थोंकूं बालक भक्ष्याभक्ष्यविचारतैंरहितहोइकै भक्षणकरेहै ॥ तैसे भक्तजनोंकीअत्यंतप्रीतिकरिकै प्रतिबद्ध हुआहै भक्ष्याभक्ष्यवस्तुकाज्ञान जिसका ऐसाजोमैंपरमेश्वरहूं ॥ सोमैंपरमेश्वरभक्तिपूर्वक अर्पणकऱ्येहुए तिनभक्तजनोंकेपत्रपुष्पादिकवस्तुवोंकूं आपणेलीलाअवतारोंकरिकै साक्षात्हीं भक्षणकरूंहूं ॥ जैसे श्रीदामाब्राह्मणनैं अत्यंतप्रीतिपूर्वक दीयेहुएतंदुलोंकूं मैंपरमेश्वर भक्षणकरताभयाहूं ॥ तथा शबरीनैं अत्यंतप्रीतिपूर्वक दीयेहुए बदरीफलोंकूं मैंपरमेश्वर भक्षणकरताभयाहूं ॥ यातैं केवल अनन्यभक्तिहीं मैंपरमेश्वरके परितोषका निमित्तहै ॥ दूसरेइंद्रादिकदेवतावोंके परितोषणकरणेविषे जैसे बहुतद्रव्यकाखरच तथाशरीरकाआयास इत्यादिक निमित्तहोवैहै ॥ तैसे मैंपरमेश्वरकेपरितोषकरणेविषे तेनिमित्त अवश्यअपेक्षितनहींहैं ॥ किंतुकेवल एकभक्तिहीं अपेक्षितहै ॥ यातैं यहअधिकारीजन तिनदूसरे देवतावोंके परित्यागकरिकै एक मैंपरमेश्वरकूंहीं आराधनकरैं ॥ और किसीटीकाविषेतौं (पत्रंपुष्पम्) इसश्लोककायह अर्थ कथनकऱ्याहै ॥ (द्वेरूपेवासुदेवस्यचलं चाचलमेवच ॥ चलंसंन्यासिनो रूपमचलंप्रतिमादिकम्) ॥ अर्थयह ॥ परमेश्वरवासुदेवके चल अचल यहदोरूपहोवैहैं ॥ तहांसंन्यासीतौं चलरूपहै॥ और शालग्रामप्रतिमादिक अचलरूपहै इति ॥ इस शास्त्रकेवचनविषे संन्यासी तथाशालग्रामप्रतिमादिक परमेश्वरकेरूप कथनकरेहैं ॥ और (अभ्यागतःस्वयं विष्णुः) अर्थयह भोजनकेसमय गृहविषेप्राप्तहुआ अतिथि विष्णुरूपहोवैहै इति ॥ इसस्मृतिविषेभी अतिथिकूं विष्णुरूपकह्याहै ॥ यातैं जोअधिकारीपुरुष शालग्रामविषे अथवा प्रतिमाविषे भक्तिपूर्वक पत्रपुष्पादिक मैंपरमेश्वरकेताईं अर्पणकरेहै ॥ तिन भक्तिपूर्वक अर्पणकऱ्येहुए पत्रपुष्पादिकोंकूं मैंपरमेश्वरअंगीकारकरूंहूं इति ॥ अथवा भोजनकालविषे गृहविषे प्राप्तभयाजोअतिथिहै ॥ तिस अन्नार्थीअतिथिकेताईं जोपुरुष जैसे शाकफलादिक आपभोजनकरेहै तैसीहीं शाकफलादिक भक्तिपूर्वकदेवैहै ॥ तिसपुरुषके भक्तिपूर्वकदीयेहूए तिनपत्रपुष्पादिकोंकूं मैंपरमेश्वर साक्षात् तिसअतिथिकेमुखकरिकै भोजनकरूंहूंइति ॥ २६ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जिसभजन करिकै आप प्रसन्नहोवोहो ॥सो आपका भजन किसप्रकारका होवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिसभजनकेप्रकारकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यत्करोषियदश्नासियज्जुहोषिददासियत् ॥ यत्तपस्यसिकौंतेयतत्कुरुष्वमदर्पणम् ॥ २७ ॥ यत् । करोषि । यत् । अश्नासि । यत् । जुहोषि । ददासि । यत् । यत् । तपस्यसि । कौन्तेय । तत् । कुरुष्व । मदर्पणम् ॥२७॥ (इतिपदच्छेदः) ॥हेकौंतेय तूं जो करताहै तथाजो भोजनकरताहै तथा जो होमकरताहैं तथा जो दान करताहै तथा जो तपकरताहै सोसर्व मैंपरमेश्वरकेअर्पण कर ॥ २७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन शास्त्रकी आज्ञातैंविनाहीं केवलरागकरिकैंप्राप्त जिसगमन आगमनरूप लौकिककर्मकूं तूं करताहैं ॥ तथा आपणीतृप्तिवासतैं अथवा कर्मोंकीसिद्धिवासतै जिसअन्नकूं तूं भोजनकरताहै ॥ तथा शास्त्रकेबलतैं जिसनित्य अग्निहोत्रादिकहोमकूं तूं करताहैं ॥ ईहां (जुहोषि) यहहोमकावाचकपद श्रौतस्मार्त्तसर्वहोमका उपलक्षणहै ॥ अर्थात् श्रौतस्मार्त्तरूपजितनेंकीहोमोंकूं तूं करताहैं ॥ तथा अतिथिब्राह्मणादिकोंकेतांई जोतूं अन्नसुवर्णादिकपदार्थ देताहैं ॥ तथा प्रतिवर्षविषे अज्ञातपापोंकी तथाप्रमादकृतपापोंकी निवृत्तिकरणेवासतै जोतूं चांद्रायणव्रतादिकतपकूंकरताहै ॥ अथवा यथाइच्छापूर्वक प्रवृत्तिकेनिवृत्तकरणेवासतै शरीरइंद्रियोंकेसमयरूपतपकूं जोतूं करताहै ॥ यहतप सर्वनित्यनैमित्तिककर्मोंकाउपलक्षणहै ॥ तेसर्वकर्म तूं मैंपरमेश्वरविषेअर्पणकर ॥ अर्थात् जोतुमारेकूंआपणेप्राणीस्वभावकेवशतैं शास्त्रतैंविनाभी अवश्यकरणेयोग्य गमनआगमनादिक लौकिककर्महैं तथा जोतुमारेकूं शास्त्रकेबलतैं अवश्यकरणेयोग्य होमदानादिक वैदिककर्महैं ॥ जेलौकिकवैदिककर्म किसीअन्यहींनिमित्तकरिकैकऱ्येहैं ॥ तेलौकिकवैदिकसर्वकर्म जैसे मैंपरमेश्वरविषेहीं अर्पितहोवैं तैसे तिनसर्वकर्मोंकूं तूंकर ॥ ईहां (कुरुष्व) इसवचनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहअर्थ बोधनकऱ्या ॥ इसप्रकार जोपुरुष मैंपरमेश्वरविषेहीं तिनसर्वकर्मोंका समर्पणकरेहै ॥ तासमर्पणका मोक्षरूपफल तिससमर्पकपुरुषकूंहीं प्राप्तहोवैहै ॥ ताकरिकै मैंपरमेश्वरकूं किंचित्मात्रभीफलहोतानहींइति ॥ यातैंयहअर्थसिद्धभया ॥ अवश्यकरणेयोग्य कर्मोंका जो परमगुरुरूपमैंपरमेश्वरविषे अर्पणहै ॥ सोअर्पणहीं मैंपरमेश्वरकाभजनहै ॥ तिसभजनवासतै दूसराकोईजुदाव्यापार करणेयोग्य नहींहै इति ॥२७॥ ❀ ॥ अब इसपूर्वउक्तभजनकेफलकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥ अधिकारीजनोंकूं तिसभजनविषे प्रवृत्तकरणेवासतै ॥

(मू०श्लो०) शुभाशुभफलैरेवंमोक्ष्यसेकर्मबंधनैः ॥ संन्यासयोगयुक्तात्माविमुक्तोमामुपैष्यसि ॥ २८ ॥ शुभाशुभफलैः । एवं । मोक्ष्यसे । कर्मबंधनैः । संन्यासयोगयुक्तात्मा । विमुक्तः । माम् । उपैष्यसि ॥ २८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन ऐसे भजनकेप्राप्त हुए तूं अर्जुन इष्टअनिष्टफलवाले कर्मरूपबंधनोंनैं परित्यागकीयाजावैगा तथा संन्यासयोगयुक्तात्माहुआतूं तिनकर्मबंधनोंतैं विमुक्त हुआ मैंपरब्रह्मकूं प्राप्तहोवैगा ॥ २८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन इसपूर्वउक्तप्रकारतैं विनाहींआयासतैंसिद्धजो सर्वकर्मोंका मैंपरमेश्वरविषेअर्पणरूपभजनहै ॥ तिसहमारेभजनकेप्राप्तहुए ॥ इष्टरूप तथा अनिष्टरूप फलहैजिनोंका ऐसेजेबंधनरूप लौकिकवैदिककर्महैं ॥ तिनकर्मोंनैं तूंअर्जुन परित्यागकीयाजावैंगा ॥ अर्थात् तेसर्वकर्म मैंपरमेश्वरविषे अर्पितहोणेतैं तैंअर्जुनका तिनकर्मोंकेसाथि संबंधहींसंभवतानहीं ॥ यातैं तिनकर्मोंकरिकै तथातिनकर्मोंकेइष्टअनिष्टफलोंकरिकै तूं लिपायमानहोवैंगानहीं ॥ तिसतैंअनंतर संन्यासयोगयुक्तात्माहुआ तूं ॥ ईहां सर्वकर्मोंका जोपरमेश्वरविषेअर्पणहै ताकानाम संन्यासहै ॥ सोसंन्यासहीं योगकीन्यांई चित्तकाशोधकहोणेतैं योगरूपहै ॥ ऐसे संन्यासयोगकरिकै युक्तहै क्या शोधितहै आत्मा क्या अंतःकरण जिसका ताकानाम संन्यासयोगयुक्तात्माहै ॥ अथवा तिससंन्यासयोगविषे युक्तहै क्या आसक्तहै आत्मा क्या मन जिसका ताकानाम संन्यासयोगयुक्तात्माहै ॥ अथवा फलसहितसर्वकर्मोंकेपरित्यागकानामसंन्यासयोगहै ॥ तासंन्यासयोगकरिकैयुक्तहै चित्तजिसका ताकानाम संन्यासयोगयुक्तआत्माहै ॥ ऐसा संन्यासयोगयुक्तात्माहुआ तथाजीवताहुआहीं तिनबंधनरूपकर्मोंतैंविमुक्तहुआ तूंअर्जुन मैंपरमेश्वरकूंहीं प्राप्तहोवैंगा ॥ अर्थात् सम्यक्‌दर्शनकरिकै अज्ञानरूपआवरणकीनिवृत्तिकरिकै मैंपरब्रह्मकूंहीं अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारतैं तूं साक्षात्कारकरैंगा ॥ तिसतैंअनंतर भोगकरिकै प्रारब्धकर्मकेनाशहुएतैं इसशरीरकेपातहुए तूं विदेहकैवल्यरूप मैंपरब्रह्मकूं प्राप्तहोवैंगा ॥ और इसवर्त्तमानकालविषेभी मैंपरब्रह्मस्वरूपहुआतूं सर्वउपाधियोंकीनिवृत्तिकरिकै मायाकृतभेदव्यवहारकाविषय नहींहोवैंगा इति ॥ २८ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् जबी तूं आपणेभक्तोंऊपरिहीं अनुग्रहकरताहैं ॥ अभक्तोंऊपरि अनुग्रहकरतानहीं ॥ तबी अस्मदादिकजीवोंकी न्यांई तूंभी रागद्वेषवालाहोणेतैं परमेश्वर कैसेहोवैंगा ॥ किंतु अस्मदादिकजीवोंकी न्यांई तूंभी कोईजीवविशेषहींहोवैंगा ॥ ऐसी अर्जुनकी शंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहैं ॥

(मू० श्लो०) समोहंसर्वभूतेषुनमेद्वेष्योस्तिनप्रियः ॥ येभजंतितुमांभक्त्यामयितेतेषुचाप्यहम् ॥ २९ ॥ समः । अहं । सर्वभूतेषु । न । मे । द्वेष्यः । अस्ति । न । प्रियः । ये । भजंति । तु । माम् । भक्त्या । मयि । ते । तेषु । च । अपि । अहम् ॥ २९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वर सर्वप्राणियोंविषे समानहूं यातैं कोईभीप्राणी मैंपरमेश्वरके द्वेषकाविषय नहीं है तथा प्रीतिकाविषय नहींहै तौंभी जेपुरुष मैंपरमेश्वरकूं भक्तिकरिकै सेवनकरेहैं तेपुरुष हीं मैंपरमेश्वरविषे वर्त्तेहैं तथामैंपरमेश्वर भी तिनंपुरुषोंविषेहीं वर्त्तताहूं ॥ २९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जितनैंकीप्राणी मैंपरमेश्वरकेभक्तहैं ॥ तथाजितनैंकीप्राणी मैंपरमेश्वरतैंविमुख अभक्तहैं ॥ तिनसर्वप्राणियोंविषे मैंपरमेश्वर समानहींहूं ॥

अर्थात् मैंपरमेश्वरका दोप्रकारकारूपहै ॥ एकतौं स्वाभाविकरूपहै ॥ और दूसरा औपाधिकरूपहै ॥ तहां सत्ता स्फुरण आनंद यहतीनोंतौं हमारा स्वाभाविक रूपहै ॥ और अंतर्यामीपणा औपाधिकरूपहै ॥ तास्वाभाविक सत्तारूपकरिकै तथास्फुरणरूपकरिकै तथाआनंदरूपकरिकैभी मैंपरमेश्वर तिनसर्वप्राणियोंविषे समानहूं ॥ तथा औपाधिक अंतर्यामीरूपकरिकैभी मैंपरमेश्वर तिनसर्वप्राणियोंविषे समानहूं इति ॥ याकारणतैंहीं कोईभीप्राणी मैंपरमेश्वरके द्वेषकाविषय नहींहै॥ तथा कोईभीप्राणी मैंपरमेश्वरके प्रीतिकाविषय नहींहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरका किसीभीप्राणीविषे द्वेष तथाप्रीति नहींहै ॥ जैसे आकाशमंडलविषे व्यापक जो सूर्यकाप्रकाशहै ॥ तिसप्रकाशका किसीभीपदार्थविषे द्वेष तथाप्रीति नहींहोवैहै ॥ किंतु सोसूर्यकाप्रकाश सर्वत्र समानहींहोवैहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् किसीभी प्राणीविषे जो तुमारा द्वेष तथाप्रीति नहींहोवै ॥ तौं तुमारेभक्तोंविषे तथाअभक्तोंविषे फलकीविषमता कैसेहोवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताफलकी विषमताविषे हेतुकहेहैं (येभजंतिइति) हेअर्जुन जेपुरुष सर्वकर्मोंका मैंपरमेश्वरविषेअर्पणरूप भक्तिकरिकै मैंपरमेश्वरकूं सेवनकरेहैं ॥ तेभक्तजन श्रेष्ठहैं ॥ ईहां (येभजंतितु) इसवचनविषेस्थितजो तु यहशब्दहै ॥ सोतुशब्द अभक्तोंकीअपेक्षाकरिकै भक्तोंकीविशेषताकेबोधनकरणेवास्तैहै ॥ साविशेषता कौंनहै ॥ ऐसी जिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् ताविशेषताकूं कहेहै (मयितेतेषुचाप्यहमिति) हेअर्जुन मैंपरमेश्वरविषेअर्पणकऱ्येहुएनिष्कामकर्मोंकरिकै जेपुरुष शुद्धअंतःकरणवालेहुएहैं ॥ तेपुरुषहीं मैंपरमेश्वरविषे वर्त्तेहैं ॥ अर्थात् निवृत्तहोइगयाहैरजतमरूपमलजिसका तथासत्वगुणकीअधिकताकरिकै अत्यंतस्वच्छहुआ ऐसाजोअंतःकरणहै ॥ ऐसेअंतःकरणकी मैंपरमेश्वरकेआकारवृत्तिकूं उपनिषदरूपप्रमाणकरिकैउत्पन्नकरतेहुए तेभक्तजनहीं मैंपरमेश्वरविषेवर्तेहैं ॥ अभक्तजन इसप्रकारतैं मैंपरमेश्वरविषे वर्त्ततेनहीं ॥ और मैंपरमेश्वरभी तिनभक्तजनोंविषेहीं वर्त्तताहूं ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरभी तिनभक्तजनोंकेअत्यंतस्वच्छचित्तकीवृत्तिविषे प्रतिबिंबितहुआ तिनभक्तोंविषेहीं वर्त्तताहूं ॥ काहेतैं इसलोकविषे जोजोस्वच्छद्रव्यहै ॥ तास्वच्छद्रव्यका यहहींस्वभावहोवैहै ॥ जो जिसपदार्थकेसाथि तास्वच्छद्रव्यकासंबंधहोवैहै ॥ तिसपदार्थकेआकारकूं सोस्वच्छद्रव्य आपणेविषेग्रहणकरेहै ॥ और तास्वच्छद्रव्यकेसंबंधवाला जोजोपदार्थहोवैहै ॥ तिसपदार्थकाभी यहहींस्वभावहोवैहै ॥ जोतिसस्वच्छद्रव्यविषे प्रतिबिंबभावकूंप्राप्तहोणा ॥ और इसलोकविषे जोजो अस्वच्छद्रव्यहोवैहै ॥ तिसअस्वच्छद्रव्यकाभी यहहींस्वभावहोवैहैं ॥ जोआपणेसंबंधवालेपदार्थकेभीआकारकूं आपणेविषेनहींग्रहणकरणा ॥ और ताअस्वच्छद्रव्यकेसंबंधवालेपदार्थकाभी यहहींस्वभावहोवैहै ॥ जो तिस अस्वच्छद्रव्यविषे प्रतिबिंबभावकूंनहींप्राप्तहोणा ॥ जैसे सर्वत्रसमानविद्यमानहुआभी सूर्यकाप्रकाश स्वच्छदर्पणादिकोंविषेहीं अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ अस्वच्छघटादिकोंविषे अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ इतनैंमात्रकरिकै ताप्रकाशका तिनदर्पणादिकोंविषे कोईराग सिद्धहोवैनहीं ॥ तथा तिनघटादिकोंविषे कोई

द्वेष सिद्धहोवैनहीं ॥ तैसे सर्वत्रसमानहुआभी मैंपरमेश्वर भक्तजनोंकेअत्यंतस्वच्छचित्तविषेहीं अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवूंहूं ॥ अभक्तजनोंकेअत्यंतअस्वच्छचित्त विषे अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवूंनहीं ॥ इतनैंमात्रकरिकै मैंपरमेश्वरका तिनभक्तजनोंविषे कोईराग सिद्धहोवैनहीं ॥ तथा तिनअभक्तजनोंविषे कोईद्वेष सिद्धहोवै नहीं ॥ यातैं मैंपरमेश्वरविषे किंचित्मात्रभी विषमतानहींहै ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसेरागद्वेषतैंरहितहुआभी अग्नि आपणेसमीपस्थितप्राणीयोंकेहीं शीतकूंनिवृत्त करेहै ॥ दूरस्थितप्राणियोंकेशीतकूं निवृत्तकरैनहीं ॥ तथा जैसे रागद्वेषतैंरहितहुआभी कल्पवृक्ष आपणेसमीपस्थितमनुष्योंकूंहीं मनवांच्छितपदार्थोंकीप्राप्ति करेहै ॥ दूरस्थितमनुष्योंकूं मनवांच्छितपदार्थोंकीप्राप्तिकरैनहीं ॥ इतनैंमात्रकरिकै ताअग्निविषे तथाकल्पवृक्षविषे विषमतादोषकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ तैसेरागद्वेष तैंरहितहुआभी मैंपरमेश्वर शरणागतकूंप्राप्तहुए भक्तजनोंकेहींबंधनकूं निवृत्तकरूंहूं ॥ अन्यप्राणियोंकेबंधनकूंनिवृत्तकरतानहीं ॥ इतनैंमात्रकरिकै मैंपरमेश्वर विषेभी विषमतादोषकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ २९ ॥ ❁ ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकीभक्तिकाहीं यहप्रभावहै ॥ जोसर्वत्रसमान मैंपरमेश्वरविषेभी विषम ताकूं दिखाइदेवैहै ॥ तिसहमारीभक्तिकेप्रभावकूं तूं अब श्रवणकर ॥

(मू० श्लो०) अपिचेत्सुदुराचारोभजतेमामनन्यभाक् ॥ साधुरेवसमंतव्यःसम्यग्व्यवसितोहिसः ॥ ३० ॥ अपि । चेत् । सुदुराचारः । भजते । माम् । अनन्यभाक् । साधुः । एव । सः । मंतव्यः । सम्यक् । व्यवसितः । हि । सः ॥ ३० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन जोकोईपुरुष अत्यंतदुराचरणवालाहुआ भी जबी अनन्यचित्तहोइकै मैंपरमेश्वरकूं भजेहै तबी सोपुरुष साधु हीं मानणा जिसकारणतैं सोपुरुष साधु निश्चयवालाहै ॥ ३० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोकोई पुरुष अजामिलादिकोंकीन्यांई पूर्व अत्यंतदुराचरणवालाहुआभी जबी किसीपूर्वलेपुण्यकर्मकेउदयतैं अनन्यचित्तवालाहुआ मैंपर मेश्वरकूं सेवनकरेहै ॥ तबी सोपुरुष पूर्वअसाधुहुआभी तिसभजनकालविषे साधुहींमानणा ॥ जिसकारणतैं सोपुरुष तिसकालविषे साधुनिश्चयवालाहींहै ॥ तहां दुराचारीपुरुषभी परमेश्वरके आराधनतैं साधुहींहोवैहै ॥ यहवार्त्ता अन्यशास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (अतिपापप्रसक्तोपिध्यायन्निमिषमच्युतम् ॥ भूयस्तपस्वीभवतिपंक्तिपावनपावनः ॥ १ ॥ प्रायश्चित्तान्यशेषाणितपःकर्मात्मिकानिवै ॥ यानितेषामशेषाणांकृष्णानुस्मरणंपरम् ॥ २ ॥) अर्थयह ॥ अत्यंतपा पकर्मोंविषेप्रसक्तपुरुषभी जबी अनन्याचित्तहोइकै एक निमेषमात्रकालपर्यंतभी परमेश्वरकाआराधनकरेहैं॥तबी तिसपरमेश्वरकेआराधनकेप्रभावतैं सोपुरुष तिनसर्व पापोंतैंरहितहोइकैपुनःतपस्वीहोवैहै ॥ तथा सोपुरुष पंक्तिकूं पावनकरणेहारे सदाचारवालेपुरुषोंकूंभी आपणेदर्शनतैंपावनकरेहैंइति ॥ किंवा पापकीनिवृत्तिकरणे

वासतै धर्मशास्त्रनैं विधानकऱ्ये जितनैंकी कृच्छ्र अतिकृच्छ्र महाकृच्छ्रचांद्रायण इत्यादिक तपरूपप्रायश्चित्तहैं ॥ तथा जितनैंकी वाजपेययज्ञ राजसूययज्ञ अश्वमेधयज्ञ इत्यादिक कर्मरूपप्रायश्चित्तहैं ॥ तिनसर्वप्रायश्चित्तोंतैं श्रीकृष्णभगवान्‌कास्मरण अधिकहैं इति ॥ तात्पर्ययह ॥ तेकृच्छ्रादिकप्रायश्चित्त जिसजिसपापकीनिवृत्तिकरणेवासतै कऱ्येजावैंहैं ॥ तिसतिस पापकीहीं निवृत्तिकरेहैं ॥ अन्यपापकीनिवृत्तिकरैनहीं ॥ और यहपरमेश्वरकास्मरणतौ शतकोटिकल्पोंकेपापोंकूंनाशकरेहैं ॥ यहवार्त्ताभी शास्त्रविषें कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥(अहंब्रह्मेतिमांध्यायन्नेकाग्रमनसासकृत् ॥ सर्वंतरतिपाप्मानंकल्पकोटिशतैःकृतम्) ॥ अर्थयह ॥ जो पुरुष एकाग्रमनकरिकै एकवारभीमैंब्रह्मरूपहूं याप्रकारतैं अभेदरूपकरिकै मैंपरमेश्वरकूं चिंतनकरेहैं ॥ सोपुरुष शतकोटिकल्पोंकरिकैकऱ्येहुए सर्वपापोंकूं नाशकरेहै इति ॥ ३० ॥ ❀ ॥ तहां अनन्य चित्तहोइकै जोपरमेश्वरकास्मरणहै ॥ सोस्मरणहीं मोक्षकासाधनहैं ॥ याप्रकारके सम्यक्‌निश्चयतैं सोपुरुष पूर्वलीदुराचारताकूं परित्यागकरिकै शीघ्रहीं धर्मात्माहोवैहै ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) क्षिप्रंभवतिधर्मात्माशश्वच्छांतिंनिगच्छति॥ कौंतेयप्रतिजानीहिनमेभक्तःप्रणश्यति॥३१॥क्षिप्रं। भवति । धर्मात्मा । शश्वत् । शांतिं । निगच्छति । कौंतेय । प्रतिजानीहि । नं । मे । भक्तः । प्रणश्यति॥३१॥(इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन सोपुरुष शीघ्रहीं धर्मात्मा होवैहै तथा नित्य शांतिकूं प्राप्तहोवैहै हेकौंतेय मैंपरमेश्वरका भक्त नहीं नाशहोवैहै ऐसी तूं प्रतिज्ञा कर ॥ ३१ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोपुरुष पूर्व बहुतकालका अधर्मात्माहोवैहै ॥ सोपुरुषभी मैंपरमेश्वरकेभजनकेप्रभावतैं शीघ्रहीं धर्मात्माहोवैहै ॥ अर्थात् सोपुरुष तिसभजनकेप्रभावतैं पूर्वलेदुराचारपणेकूं शीघ्रहीं परित्यागकरिकै धर्मविषेप्रीतिवालाहोवैहै ॥ किंवा तिसहमारेकूं केवल इतनामात्रहींफलनहींहोवैहै ॥ किंतु इसतैंअधिकभी फलहोवैहै ॥ इस अर्थकूं अब श्रीभगवान् कहेहै (शश्वच्छांतिंनिगच्छतिइति) हेअर्जुन तिसहमारेभजनकेप्रभावतैं सोपुरुष नित्यशांतिकूंभी प्राप्तहोवैहै ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकेभजनकरिकै शुद्धअंतःकरणवालाहुआ सोपुरुष तीव्रवैराग्यवान्‌होइकै सर्वविषयभोगोंकीइच्छातैंरहितहोवैहै ॥ शंका ॥ हे भगवन् परमेश्वरकापूजनकरणेहाराभी कोईकभक्त पूर्वअभ्यासकऱ्येहुएदुराचारकूं नहींत्यागकरताहुआ धर्मात्मानहींभीहोवैगा ॥ यातैं सोभक्ततौ नाशकूंहींप्राप्तहोवैगा ॥ ऐसी अर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् तिनभक्तजनोंकेऊपरिकरुणाकेपरवशताकरिकैं क्रोधवान्‌हुएकीन्यांई ताअर्जुनकेप्रति कहेहै (कौंतेयइति) हेअर्जुन पूर्वदुराचारीहुआभी यहपुरुष मैंपरमेश्वरकेभजनकेप्रभावतैं तादुराचारकापरित्यागकरिकै शीघ्रहीं धर्मात्माहोवैहै ॥ तथा नित्यशांतिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ इसवार्त्ताकूं तुमने

कोईआश्चर्यरूपनहींमानणा ॥ किंतु यहहमारेभक्तिकाप्रभाव निश्चितहींहै ॥ यातैं हेअर्जुन इसहमारेभक्तिकेप्रभावविषे विवादकरणेहारेजेप्रतिवादीहैं ॥ तिनप्रतिवादीयोंकेसन्मुखस्थितहोइके तथाऊंचीभुजाकरिकै तिनप्रतिवादीयोंकीअवज्ञापूर्वक तथागर्वपूर्वक तूं याप्रकारकीप्रतिज्ञाकर ॥ जो मैंपरमेश्वरकाभक्त अत्यंतदुराचारी हुआभी तथाप्राणसंकटकूंप्राप्तहुआभी तथाअत्यंतमूढ तथाअशरणहुआभी नाशकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ अर्थात् दुर्गकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ किंतु सर्वप्रकारतैं सोहमाराभक्त कृतार्थहीहोवैहै ॥ हेअर्जुन इसहमारे भक्तिकेप्रभावविषे अजामिल प्रल्हाद ध्रुव गजेंद्र इसतैंआदिलेकेअनेकदृष्टांत प्रसिद्धहैं ॥ तथा (नवासुदेवभक्तानामशुभं विद्यतेक्वचित् ॥ अर्थयह ॥ परमेश्वरकेभक्तोंकूं कदाचित्भी अशुभकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ इत्यादिक अनेक शास्त्रकेवचन प्रमाणरूपहैं इति ॥ ३१ ॥

❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे आगंतुकदोषकरिकैदुष्टपुरुषोंका भगवद्भक्तिकेप्रभावतैं विस्तारकथनकऱ्या ॥ अब स्वाभाविकदोषकरिकैदुष्टपुरुषोंकाभी तिसभगवद्भक्तिकेप्रभावतैं निस्तार कथनकरेहैं ॥

(मू०श्लो०) मांहिपार्थव्यपाश्रित्ययेपिस्युःपापयोनयः ॥ स्त्रियोवैश्यास्तथाशूद्रास्तेपियांतिपरांगतिम् ॥ मां । हि । पार्थ । व्यपाश्रित्य । ये । अपि । स्युः । पापयोनयः । स्त्रियः । वैश्याः । तथा । शूद्राः । ते । अपि । यांति । पराम् । गतिम् ॥ ३२ ॥

(इतिपदच्छेदः) ॥हेअर्जुनमैंपरमेश्वरकूं आश्रयणकरिकै जेपुरुष पापयोनी भी हैं तथा स्त्रीयांहैं तथावैश्यहैं तथा शूद्रहैं तेसर्व भी परमें गतिकूं प्राप्त होवैहैं यहवार्ता निश्चितहींहै ॥ ३२ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकेशरणागतकूंप्राप्तहोइकै जेप्राणी पापयोनिभीहैं ॥ अर्थात् जातिदोषकरिकैदुष्ट जेचांडालादिकभीहैं अथवा जेप्राणी सर्पादिकतिर्यक्योनिवालेभीहैं ॥ तथा वेदकेअध्ययनादिकोंतैंरहितहोणेतैं अतिनिकृष्टजेस्त्रीयांहैं ॥ तथा कृषिवाणिज्यादिक लौकिकव्यापारोंविषेतत्पर जेवैश्यहैं ॥ तथाशूद्रत्वजातितैंहीं वेदकेअध्ययनादिकोंकेअभावकरिकै परमगतिकेअयोग्य जेशूद्रहैं ॥ तेसर्वहीं मैंपरमेश्वरकीभक्तिकेप्रभावतैं शुद्धअंतःकरणवालेहोइकै ब्रह्मसाक्षात्कारकीप्राप्तिद्वारा मोक्षरूपपरमगतिकूहीं प्राप्तहोवैहैं ॥ यहवार्त्ता तुमनैं निश्चितहींजानणी ॥ इसवार्त्ताविषे किंचित्मात्रभी तुमनैं संशयकरणानहीं ॥ ईहां (मांहि) याववचनविषेस्थितजो हि यहशब्दहै ॥ ताहिशब्दकरिकै इसअर्थविषे शास्त्रप्रमाणकीप्रसिद्धि बोधनकरीहै ॥ सोशास्त्रप्रमाण यहहै ॥ श्लोक ॥ (किरातहूणांध्रपुलिंदपुल्कसाआभीरकंकायवनाःखशादयः ॥ येऽन्येचपापायदुपाश्रयाश्रयाःशुद्ध्यंतितस्मैप्रभविष्णवेनमः ॥) अर्थयह ॥ किरात हूण अंध्र पुलिंद पुल्कस आभीर कंक यवन खश इत्यादिक जेनीचजातिवालेप्राणीहैं ॥ तथाजेअन्यभी पापआचरणवालेहैं ॥ तेसर्वप्राणी जिसपरमेश्वरकेशरणागतकूंप्राप्तहोईकै शुद्धिकूंप्राप्तहोवैहैं ॥

तिसपरमेश्वरकेतांईहमारा नमस्कारहै इति ॥ ईहां (तेऽपि) इसवचनविषेस्थितजो अपि यहशब्दहै ॥ ताअपिशब्दकरिकै(अपिचेत्सुदुराचारः) इसपूर्व श्लोकविषेकथनकऱ्येहुए दुराचारीपुरुषोंकाभी ग्रहणकरणाइति ॥ ३२ ॥ ❀ ॥ तहां इसप्रकारके स्त्रीशूद्रादिकप्राणीभी जबी परमेश्वरकेभक्तितैं परमगतिकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तबी ब्राह्मणादिक उत्तममनुष्य तिसभगवद्भक्तितैं परगतिकूंप्राप्तहोवैहैं याकेविषे क्याआश्चर्यहै ॥ इसप्रकारके कैमुतिकन्यायकरिकै श्रीभगवान् ताभगवद्भक्तिकेप्रभावकूं वर्णनकरेहैं ॥ तिनउत्तममनुष्योंकूं तिसभक्तिविषेप्रवृत्तकरणेवासतै ॥

(मू० श्लो०) किंपुनर्ब्राह्मणाःपुण्याभक्ताराजर्षयस्तथा ॥ अनित्यमसुखंलोकमिमंप्राप्यभजस्वमाम् ॥ ३३ ॥ किं । पुनः । ब्राह्मणाः । पुण्याः । भक्ताः । राजर्षयः । तथा । अनित्यम् । असुखम् । लोकम् । इमम् । प्राप्य । भजस्व । माम् ॥ ३३ ॥

(इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन मेरेभक्त उत्तमजातिवाले ब्राह्मण तथा क्षत्रिय परमगतिकूंप्राप्तहोवैहैं याकेविषे पुनः क्यांकहणाहै यातैंतूं इस अनित्य तथादुःखयुक्त मनुष्यदेहकूं प्राप्तहोइकै मैंपरमेश्वरकूं आराधनकर ॥ ३३ ॥ (इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जबीपूर्वउक्तस्त्रीशूद्रादिकप्राणीभी मैंपरमेश्वरकीभक्तिकरिकै ब्रह्मज्ञानकीप्राप्तिद्वारा मोक्षरूपपरमगतिकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तबी श्रेष्ठआचारवाले तथाउत्तमजातिवाले जेब्राह्मणहैं तथासूक्ष्मवस्तुकेविवेककरणेहारेजेक्षत्रियहैं ॥ तेब्राह्मण तथाक्षत्रिय मैंपरमेश्वरकेभक्त तिसभक्तिकरिकै ब्रह्मज्ञानद्वारा मोक्षरूप परमगतिकूं प्राप्तहोवैहैं याकेविषे पुनः क्याकहणाहै ॥ किंतु इसवार्त्ताविषे किसीकूंभी संशयनहींहै ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं मैंपरमेश्वरभक्तिका महान्प्रभावहै ॥ इसकारणतैं सर्वपुरुषार्थोंकेसिद्धकरणेकूंयोग्य तथाअत्यंतदुर्लभ इसअधिकारी मनुष्यदेहकूं प्राप्तहोइकै तूं जितनैंकालपर्यंत वहमनुष्यदेह नाशकूंनहीं प्राप्तभया तथारोगादिकोंकरिकैग्रस्तनहींभया तितनैंकालपर्यंत अतिशीघ्रतातैं महान्प्रयत्नकरिकै मैंपरमेश्वरकेशरणागतकूंप्राप्तहोउ ॥ हेअर्जुन यहमनुष्यदेहकैसाहै अनित्यहै ॥ अर्थात् शीघ्रहीं नाशहोणेहाराहै ॥ पुनःकैसाहै यहदेह असुखहै ॥ अर्थात् गर्भवासतैंआदिलैके अनेकप्रकारकेदुःखोंकरिकैग्रस्तहै हेअर्जुन यहशरीर अनित्यहै तथाअसुखरूपहै ॥ यातैं तूं मैंपरमेश्वरकेभजनविषे विलंब मतकर ॥ तथा इसशरीरकेसुखवासतै उद्यमकूंमतकर ॥ हेअर्जुन जैसे पूर्वश्रेष्ठ आचारवालेजनकादिकराजऋषि मैंपरमेश्वरकेभजनकरिकै आपणेजन्मकूं सफलकरतेभयेहैं तैसे तूं अर्जुनभी मैंपरमेश्वरकेभजनकरिकै आपणेजन्मकूं सफलकर ॥ जोतूं इसअधिकारीमनुष्यशरीरकूं प्राप्तहोइकै मैंपरमेश्वरकेचिंतनपरायणनहींहोवैंगा ॥ तौं यहतुमाराअधिकारीमनुष्यशरीरहीं निष्फलहोवैंगा ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (इहचेदवेदीदथसत्यमस्ति नचेदवेदीन्महतीविनष्टिः ॥) अर्थयह ॥ इसभारतखंडविषे अधिकारीमनुष्यशरीरकूं प्राप्तहोइकै

यहपुरुष जबी परमात्मादेवकूं साक्षात्कारकरैहै ॥ तबीइसपुरुषकूं मोक्षरूपसत्यफलकीहीं प्राप्तिहोवैहै ॥ और यहपुरुष जबी इसअधिकारीमनुष्यशरीरकूंपाइकै तिसपरमात्मादेवकूं नहींसाक्षात्कारकरैहै ॥ तबीइसपुरुषकूं वारंवार जन्ममरणरूपसंसारकीहींप्राप्तिहोइकै इति ॥ ३३ ॥ ❀ ॥ अब पूर्वकथनकऱ्येहुए भजनकेप्रकारकूंकथनकरताहुआ श्रीभगवान् इसनवमअध्यायकीसमाप्तिकरैहै ॥

(मू० श्लो०) मन्मनाभवमद्भक्तोमद्याजीमांनमस्कुरु ॥ मामेवैष्यसियुक्त्वैवमात्मानंमत्परायणः ॥ ३४ ॥ इतिश्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सुब्रह्मविद्यायांयोगशास्त्रेश्रीकृष्णार्जुनसंवादेराजविद्याराजगुह्ययोगोनामनवमोऽध्यायःसमाप्तः॥९॥ मन्मनाः । भव । मद्भक्तः । मद्याजी । माम् । नमस्कुरु । माम् । एव । एष्यसि । युक्त्वा । एवम् । आत्मानम् । मत्परायणः ॥ ३४ ॥ (इतिपदच्छेदः)

हेअर्जुन तूं मैंपरमेश्वरविषेमनवाला होउ मेराभक्त होउ तथा मेरेपूजनपरायण होउ तथा मैंपरमेश्वरकूं नमस्कारकर इसप्रकारतैं मैंपरमेश्वरकेशरणहुआ तूं आपणेअंतःकरणकूं मैंपरमेश्वरविषे जोडिकरिकै मैंपरमेश्वरकूं हीं प्राप्तहोवैंगा ॥ ३४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जिसपुरुषकामन केवल मैंपरमेश्वरविषेहीं संलग्नहै अन्यपुत्रभार्यादिकोंविषे संलग्नहैनहीं तिसपुरुषकानाम मन्मनाहै ॥ ऐसा मन्मना तूंहोउ ॥ और जोपुरुष एकमैंपरमेश्वरकाहींभक्तहै धनादिकपदार्थोंकीप्राप्तिवासतै अन्यराजादिकोंका भक्तहैनहीं तिसपुरुषकानाम मद्भक्तहै ॥ ऐसा मद्भक्त तूंहोउ ॥ तात्पर्ययह ॥ इसलोकविषे जोराजादिकोंकाभृत्यहोवैहै ॥ सोभृत्य धनादिकपदार्थोंकीप्राप्तिवासतैं तिन राजादिकोंका भक्तहुआभी तिनराजादिकोंविषे तिसभृत्य कामन संलग्नहोवैनहीं ॥ किंतु ताभृत्यकामन आपणेस्त्रीपुत्रादिकोंविषेहीं संलग्नहोवैहै ॥ यातैं सोभृत्य ताराजाका भक्तहुआभी तन्मना होवैनहीं ॥ और आपणेपुत्रस्त्रीआदिकोंविषे सोभृत्य तन्मना हुआभी तिनस्त्रीपुत्रादिकोंका भक्तहोवैनहीं ॥ तैसे तूंअर्जुन मैंपरमेश्वरविषे भक्तिवालाहुआभी अन्यविषेमनवाला मत होउ तथा मैंपरमेश्वरविषे मनवालाहुआभी अन्यविषेभक्तिवाला मतहोउ ॥ किंतु तूंअर्जुनतौं मैंपरमेश्वरविषेहीं मनवाला तथाभक्तिवाला होउ इति ॥ तथा तूंअर्जुन मद्याजी होउ ॥ अर्थात् एकमैंपरमेश्वरकेहीं पूजनपरायणहोउ ॥ तथाशरीर मन वाणी करिकै तूं मैंपरमेश्वरकूंहीं नमस्कारकर ॥ इसप्रकारतैं मत्परायणहुआतूं अर्थात् एकमैंपरमेश्वरके शरणागतकूंप्राप्तहुआतूं आपणेअंतःकरणकूं मैंपरमेश्वरकेचिंतनविषेजोडिकै मैंपरमानंदघन स्वप्रकाश सर्वउपद्रवोंतैं रहित अभयब्रह्मकूंहीं घटाकाशमहाकाशकीन्यांई तथानदीसमुद्रकीन्यांई अभेदरूपकरिकै प्राप्तहोवैंगा ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे घटरूपउपाधिकेनिवृत्तहुए घटाकाश अभेदरूपकरिकै महाकाशभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तथा जैसे श्रीगंगायमुनादिकनदीयां आपणेनामरूपकापरित्यागकरिकैसमुद्रविषे एकताभावकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे